किलोल

आर.अन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 8, अगस्त 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

अनुक्रमणिका

माँ 7

करोना 8

काका कलाम एक पाती तेरे नाम 10

लाकडाउन मे तैयार, पढाई तुंहर दुआर 12

मिलकर पेड़ लगाएं 14

पेड़ नीम का 16

पानी-पानी 19

पथ मेरा गुरु जन सरल करें 20

गिनती 22

बाल पहेलियाँ 23

स्कूल 25

माँ की बातें 26

अधूरी कहानी पूरी करो 29

बबलू की उलझन 29

प्रीतम कुमार साहू द्वारा पूरी की गई कहानी 30

सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी 31

श्रीमती मंजू साहू द्वारा पूरी की गई कहानी 32

प्रीतम कुमार साहू द्वारा पूरी की गई कहानी 33

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 34

स्कूल खुलने पर तैयारी 34

ना जाने कब हम बड़े हो गए 35

वृक्ष 37

दर्पण 38

फुलवारी 40

स्कूल चलो 42
समस्या का हल 44
कोरोना 46
ओस की बूंद 48
माता-पिता 49
श्रीरामचरितमानस का प्रसंग 50
परीक्षा 52
बादल 53
ये बात नहीं जरा सी! 54
एक पाती शिक्षक के नाम 56
पहाड़ा गीत 58
वर्षा रे वर्षा 60
पेड़ो को मत काटो 61
हमें बताओ 62
योग 64
तितली रानी 66
राम भरोसे 67
ओ काले-काले बादल कहाँ चले 69
छोटी सी गौरैया पानी में फुदकती है 71
मेंढक गुरु जी 72
नटखट नन्ही 74
दीवार घड़ी 75
लोरी 76
छुक-छुक 77
हमारे प्रेरणास्रोत- पिंगली वेंकैया 78

बचपन मे प्रतिज्ञा..... 80
मेरा परिवार 82
बचपन..... 84
धान के विरवे..... 88
संस्कार चाहिए 90
सुग्घर ढेंस 91
पापा 94
भोलापन 96
त्रिया चरित्र..... 97
परी हूँ मैं..... 100
बिलाड़ी 102
संघर्ष..... 103
भोर 105
पहेली (छाता) 106
पढ़ाई तुंहर द्वार 107
तिरंगा प्यारा 108
दाखिला लें सरकारी..... 110
सफलता की कहानी 112
चुनाव..... 115
धरती हरा भरा बनाएं..... 117
जैसे कोई अंगारा..... 119
करते हैं जो योग..... 121
चिता सुलगा..... 123
मेंढक..... 125
आम..... 126

पकड़ में आया चूहा..... 128
स्वतंत्रता दिवस..... 130
चलो चले चलो चले, स्कूल चले..... 131
चित्र देख कर कहानी लिखो..... 132
सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी..... 133
अनन्या तंबोली द्वारा भेजी गई कहानी..... 134
लक्ष्मी तिवारी द्वारा भेजी गई कहानी..... 135
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र..... 136

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

प्रिय शिक्षक साथियों एवं बच्चों,

आप सभी को इस माह रक्षाबन्धन की बहुत बहुत शुभकामनाएँ,

इसके साथ ही एक और शुभकामना, आपके स्कूल काफी लंबे समय के इन्तजार के बाद खुल रहे हैं. आपको अपने दोस्तों से और अपने शिक्षकों से मिलने का अवसर प्राप्त होगा, लेकिन एक बात का ध्यान रखें. सावधानी बहुत आवश्यक है. मास्क, दूरी और हाथों को धोते रहना अत्यंत आवश्यक है. आपको ज़रा भी सर्दी-खांसी या बुखार जैसा लगे तो स्कूल बिलकुल न जाएं और जल्दी से अपना इलाज करवाएं.

रक्षाबंधन का त्यौहार भाई- बहन के प्यार का त्यौहार है. आपको अपने भाई अथवा बहन दोनों को नियमित स्कूल जाने एवं पढाई करते रहने पर ध्यान देना है. यदि किसी कारण से किसी एक की भी पढाई पर रोक लगाने की मजबूरी आए तो दोनों को मिलकर इस संकट से एक दूसरे को बचाना होगा.

अपना ख़याल रखें और पूरे मन से सीखना जारी रखें..

आपका
आलोक शुक्ला

माँ

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

माँ ममता की चांदनी
माँ सूरज की धूप.
वक्त पड़े ज्वाला मुखी
वक्त पड़े नल कूप..

माँ मीरा की त्याग है
माँ बंसी की तान.
माँ बिना जीवन लगे
जैसे रेगिस्तान..

माँ है तो है महात्मा
माँ है तो हम बने आत्मा
माँ बिना जग सूना सूना
माँ बिना न पूर्ण परमात्मा

शुभाशीष शुभ कामना
ममता दया दुलार.
माँ के आँचल में बसे
सभी सुखों का सार..

*****

करोना

रचनाकार- कमलकिशोर ताम्रकार "काश"

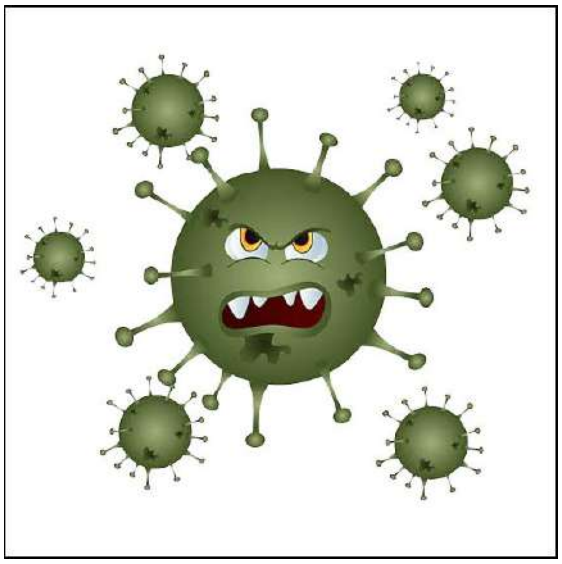

एक कदम करो ना की ओर
हर कदम स्वच्छता की भोर..
भीड भाड मे जाये ना
किसी से हाथ मिलाये ना
मुंह को मास्क से ढकलो ना
आंख नाक मुंह को छुये ना

एक कदम उदासीनता की डोर
हर कदम बढे मौत की ओर

तेज बुखार, बलगम प्रहार
सर्दी खांसी, हो बार-बार
सांस में तकलीफ लगातार
आइसोलेट रहकर, करे उपचार

एक कदम सावधानी की ओर
हर कदम समझदारी की जोर

करें दूर से ही नमस्कार
मुंह मास्क से ढक लो यार
धो लो साबुन से हाथ लगातार
प्रतिरोधक क्षमता बढाओ यार

एक कदम करो ना की ओर
हर कदम स्वच्छता की भोर

*****

काका कलाम एक पाती तेरे नाम

रचनाकार- कमलकिशोर ताम्रकार

काका कलाम,काका कलाम
बार बारकरे हम तुझे सलाम

हमें जरा तो बतलाओ
पहुंचे कैसे इस मुकाम

क्या क्या पढे,क्या गढे
दुनिया करें तुझे सलाम

कितने सारे किये है शोध
मिसाईल मेन पडा तेरा नाम
अपने लक्ष्य के प्राप्ति हेतु
दिया आपने क्या बलिदान

राष्ट्रपति भी बनकर काका
नहीं आप मे तनिक गुमान

बताओ हमें वह राह आसान
हम भी बढाये देश की शान

कुंवारे ही रह गये काका
रचायी नही क्यो? शादी

रहती काकी तो बट जाता
प्यार हमारा आधा-आधा

देना होगा अवश्य काका
सभी मेरे प्रश्नों का उत्तर

टाल ना देना काका हमें
छोटा बच्चा समझ कर

करता हूँ हाथ जोड़कर
बार बार, यह अनुरोध

आपका अपना लाडला
भतिजा कमलकिशोर

*****

लाकडाउन मे तैयार, पढाई तुंहर दुआर

रचनाकार- कमलकिशोर ताम्रकार

आओ बच्चों तुम्हें सिखाये, डिजिटल शिक्षा हिन्दूस्तान की.
इस मोबाईल को स्पर्श करो, ये आनलाईन गुरु है ज्ञान की..
लाकडाउन में तैयार, पढाई तुहंर दुआर.....2

बंद पडे हैं स्कूल सारे, कोरोना से सब बच्चे हताश हैं.
बंद न होगी अपनी पढाई, डिजिटल शिक्षा अपने पास हैं..
लाकडाउन में तैयार, पढाई तुहंर दुआर.....2

लाकडाउन से यह न समझे, कोरोना रोक लगायेगा.
जाओ सबसे कह दो अब, गुरूओ से जीत न पायेगा..
लाकडाउन में तैयार, पढाई तुहंर दुआर.....2

उंगलियों से खिलवाड़ करते, एंनरायिड में जाल हैं.
ई एजुकेशन इसे कहते, यह मोबाईल का कमाल है..
लाकडाउन में तैयार, पढाई तुंहर दुआर.....2

चलो इस दौर में भी हम, घर घर शिक्षा की अलख जगायेंगे.
मोबाईल चलाना, ज्ञान बढाना, आनलाईन सबको सिखायेंगे..
लाकडाउन में तैयार, पढाई तुहंर दुआर.....2

लाकडाउन मे डिजिटल शिक्षा, बच्चों के लिए वरदान है.
जो न जुड़ पाये ई एजुकेशन से, वह रह जाये नादान हैं..
लाकडाउन मे तैयार, पढाई तुंहर दुआर.....

*****

मिलकर पेड़ लगाएं

रचनाकार- आराध्य गौतम, कक्षा 4, केंद्रीय विद्यालय रायपुर

मैंने इक नन्हा सा बीज लगाया
कुछ दिनों में उसमे अंकुर आया

पानी देखकर खाद भी डाली
कुछ दिन उसकी की रखवाली

कुछ दिनों में पत्ते आए
मेरे मन को बहुत लुभाए

उस पर देता ध्यान में सारा
बन गया इक दिन वह वृक्ष हमारा

हर दिन प्यार से मैंने सींचा
आज बन गया पेड़ वो ऊंचा

फल और फूल हमें है देता
बस बदले में पानी लेता

पेड़ हमारे साथी हैं भले
रक्षा फिर क्यूं ना हम इनकी करें

पेड़ से मिलती हमको छाया
लगती सुंदर इनकी काया

आओ हम सब मिलकर कसम ये खाएं
सब मिलजुल कर पेड़ लगाएं.

*****

पेड़ नीम का

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

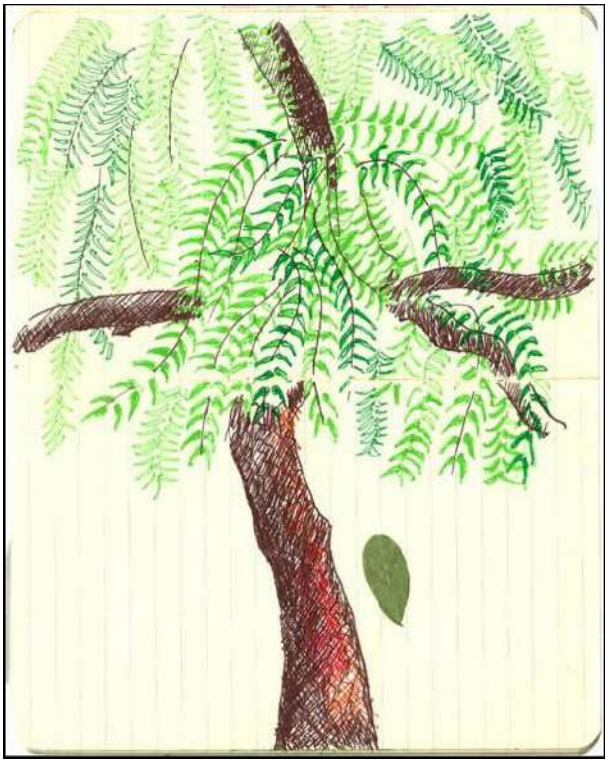

शुद्ध हवा और पेड़ दवा का
हरा भरा वह पेड़ नीम का |

नीम निबौरी कड़वा लेकिन
उपयोगी है पेड़ नीम का |

दातुन बनता है टहनी से
शीतल छाया पेड़ नीम का |

चर्मरोग को दूर भगाता
वैद्य बड़ा है पेड़ नीम का |

*****

किसनहा बेटा बन जातेंव

रचनाकार- श्रवण कुमार साहू, "प्रखर"

सुत उठ के बड़े बिहनिया,
धर के नांगर जाथौं.
करम के मैं ह बिजहा बोथों,
माटी के बेटा कहाथौं..

खेलत रहिथौं दिनभर मैं ह
धुर्रा चिखला पानी.
इही मोर बर गीता रमायन,
येकरे संग मितानी..

कतको दुख पीरा ल संगी,
मिहनत म भूल जाथौं.
हरियर-हरियर डोली देख के,
झुमके गाना गाथौं..

किसानी के जम्मो काम ल
जांगर भरे कमाथौं.
बासी,चटनी खाके मैं हर
जिवरा अपन जुडाथौं..

नांगर, बैला, कोप्पर, बेलन,
इही मोर संगवरी
इही हरे मोर मथुरा काशी,
सरग के हरे दुवारी...

इही हरे मोर पुरखा के चिन्हा,
इही मोर रोजी रोटी.
येकर परसादे हांसत रहिथे,
मोर घर के बेटा-बेटी..

*****

पानी-पानी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

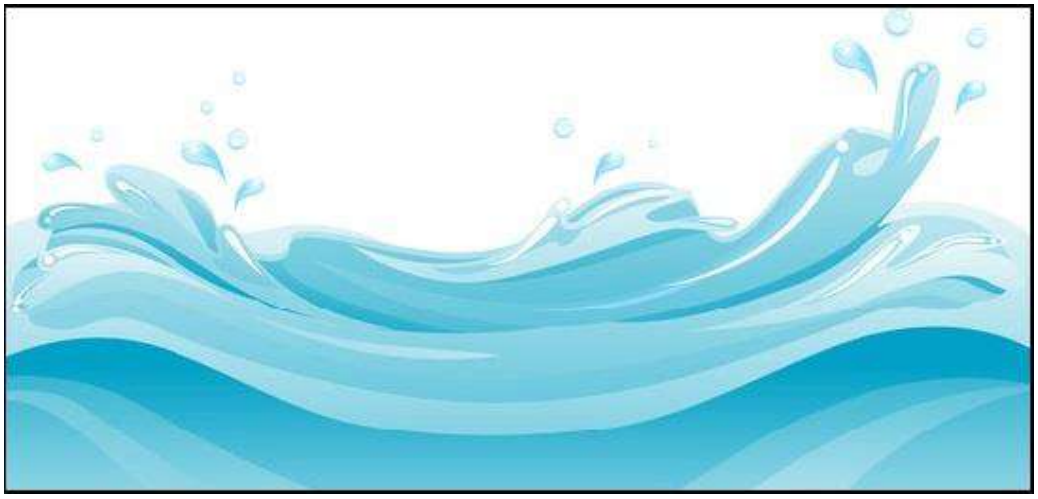

देख हर तरफ पानी - पानी.
मचल रही है मछली रानी.

बादल बिजली और पवन की
सबकी अपनी कथा-कहानी.

गड़-गड़, गड़-गड़ गरज रहा है
अब तो हुआ मेघ अभिमानी.

सर-सर, सर-सर हवा बह रही
हो गई अब वह भी दिवानी.

चम-चम, चमक रही है बिजली
पावक जलज और फिर पानी?

मुन्नू भैया पूछ रहा है
अब कैसे बूझोगे नानी.

*****

पथ मेरा गुरु जन सरल करें

रचनाकार- भगवत पटेल

उपदेशों से मन होता भारी,
सूक्ति वाक्य जो समझ से परे है.
पुस्तक बोझ समझ कर ढोता
विद्यालय से हर रोज डरे है.
कुछ ऐसा कर दो मेरे गुरुवर,
मन में रोचकता झट आ भरे,
पथ मेरा गुरु जन सरल करें..

पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम
उत्साह मेरा बुझा रहे.
विद्यालय में बढ़ते संसाधन
फिर भी मुझको चिढ़ा रहे.
हर लो चिंता मेरी गुरुवर,
हम पढ़ने से हैं बहुत डरे,
पथ मेरा गुरु जन सरल करें..

उलट मान्यता स्कूलों की,
हमको कमतर आंक रहे.
सभी पुस्तकों का निचोड़,
गुरुजन हमको पढ़ा रहे.
खूब पढ़े हम सब बच्चे,
ऐसा कुछ काम करें,
पथ मेरा गुरु जन सरल करें..

बाल साहित्य की रुचिकर दुनिया,
छपी लिखी सामग्री पाये,
बहुत कार्टून छपे हैं इन पर,
बहुत ज्ञान हम इससे पाएं.
ऐसा जोर लगा दो गुरुवर,
शाला आने से न डरें,
पथ मेरा गुरु जन सरल करें..

पढ़ने को हम कुछ खोजें,
खोजबीन कर हम लिख लें
खेलें, सीखें सब गतिविधियां,
अच्छी रचना हम रच लें.
ऐसी दिशा दिखा दो गुरुवर,
डूबें उसमें, फिर स्वयं करें,
पथ मेरा गुरुजन सरल करें..

*****

गिनती

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

एक चिड़िया आती है, चीं-चीं गीत सुनाती है.
दिल्ली की दो बिल्ली हैं, दोनों जाती दिल्ली हैं..

तीन चूहे राजा हैं, रोज बजाते बाजा हैं.
चार कोयल आती हैं, मीठी गीत सुनाती हैं..

पाँच बन्दर बड़े शैतान, मारे थप्पड़ खींचे कान.
छः तितलियों की छटा निराली, उड़ती हैं वे डाली-डाली..

सात शेर जब मारे दहाड़, काँपे जंगल हिले पहाड़.
आठ हाथी जंगल से आये,गन्ने पत्ती खूब चबाये..

नौ मयूर जब नाच दिखाये, सब बच्चे तब ताली बजाये.
दस तोते जब मुँह खोले, भारत माता की जय-जय बोले..

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

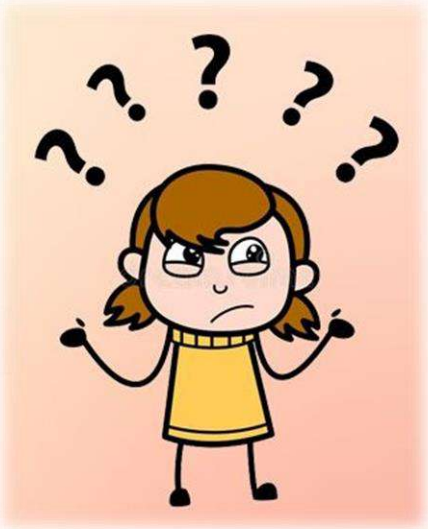

1. साफ करो हाथों को मुझसे,
कोरोना को दूर भगाओ.
साबुन मुझको समझ न लेना,
प्यारे बच्चों नाम बताओ..
★★★★★★★★★★★★

2. तीन अक्षर का मेरा नाम,
करूँ मैं सबका काम तमाम.
दुनियाँ मुझसे कांप जाए,
कोई मेरा नाम बताए..
★★★★★★★★★★★★

3. हाथों में तुम पहन के मुझको,
कोरोना को दूर भगाओ.
मेडिकल में पाया जाऊँ,
बच्चों मेरा नाम बताओ.
★★★★★★★★★★★★

4. कोरोना से बचना है तो,
मुँह में पहन के मुझको आओ.
वायरस को मैं रोके रखता,
झट से मेरा नाम बताओ.
★★★★★★★★★★★★★★

5. आँखों में वायरस न जाने देता,
ऐसी हूँ मैं चीज निराली.
दुनियाँ सारी मुझको पहने,
नव्या, दिव्या भोली-भाली..
★★★★★★★★★★★★★★

6. तीन अक्षर का मेरा नाम,
कीटाणु भगाना मेरा काम.
प्रथम हटे तो बुन जाऊं,
प्यारे बच्चों क्या कहलाऊँ..
★★★★★★★★★★★★★

उत्तर 1. सेनेटाइजर, 2. कोरोना, 3. सर्जिकल दस्ताने, 4. मास्क, 5. फेसमास्क, 6. साबुन

*****

स्कूल

रचनाकार- रीता मंडल

किसने है ये स्कूल बनाए,
कोई हमको जरा बताए.

टीचर जी से डर लगता है,
रोज-रोज पढ़ना पड़ता है.

होमवर्क लगता है दुश्मन,
मम्मी से करवाता अनबन.

दोस्त यहाँ बस मिलते प्यारे,
शोर मचाते मिल कर सारे.

टन-टन-टन जब घंटी बजती,
लगे जेल से छुट्टी मिलती.

कितना प्यारा होता बचपन,
होता गर ना पढ़ने का बंधन.

*****

माँ की बातें

रचनाकार- हितेंद्र कुमार श्रीवास

माँ की बातें,
अनमोल बातें,
जैसे गढ़ें कोई,
बहुमूल्य बातें.

माँ की बातें,
सुघड़ बातें,
माँ की बातें,
जग की बातें.

अमूल्य बातें,
सहज बातें
सरल बातें
माँ की बातें.

समझ न पाते,
फिर पछताते,
माँ की बातें
उज्ज्वल बातें.

*****

अन्नदाता

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू (शिक्षक)

मेहनत कर जो अन्न उगाता.
अन्नदाता वो कहलाता..

खेत जोतकर फसल उगाता.
सब जीवों का भूख मिटाता..

आसमान पर बादल छाता.
उनका मन हर्षित हो जाता..

टर्र-टर्र जब मेढ़क गाता.
वर्षा ऋतु साथ में आता..

लेकर हल खेतों में जाता.
अन्न डाल वो हल चलाता..

अंकुरित जब अन्न हो जाता.
धीरे-धीरे बढ़ता जाता..

हरियाली खेतों मे छाता.
उनका मन पुलकित हो जाता..

दवा,खाद और पानी देकर.
फसलों को मजबूत बनाता..

फसलों पर जब अन्न आता.
पकने पर कटाई कराता..

कटी फसल की मिजाई कराता.
खलिहानों से घर में लाता..

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

बबलू की उलझन

आजकल बबलू बहुत अनमना था. हमेशा गुमसुम रहता, किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता. पहले हमेशा किसी न किसी काम में लगा रहता था. कभी पढ़ाई, कभी ड्राइंग, कभी गमलों में लगे पौधों की देखभाल. पर आजकल न जाने उसे क्या हो गया था. तीन चार दिनों से उसकी दिनचर्या बदल गई थी. सुबह देर से सोकर उठना, खाने-पीने में भी कोई रुचि नहीं, न खेलकूद, न पढ़ाई, न ड्राइंग, न बागवानी. दिनभर सुस्त रहना. शुरुआत के एक दो दिनों तक मम्मी पापा ने बबलू के व्यवहार में आए इस परिवर्तन को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया, पर जब तीसरे और चौथे दिन भी बबलू की सुस्ती और अनमनापन खत्म नहीं हुआ तो उन्हें चिंता होने लगी. बबलू से पूछने पर भी कुछ खास समझ में नहीं आया कि आखिर इस उदासी का कारण क्या है.

अंततः चौथे दिन शाम को मम्मी पापा ने आपस में विचार-विमर्श किया और यह समझने की कोशिश की कि बबलू के व्यवहार में आए इस परिवर्तन का कारण क्या हो सकता है और इस स्थिति को कैसे ठीक किया जा सकता है?

देर तक आपस में विचार-विमर्श के बाद उन्हें यह तो समझ में आ गया कि कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण लंबे समय से बंद पड़े स्कूल और बाहर आना-जाना नहीं होने के कारण घर में रहते रहते बबलू ऊब गया है. पर इस स्थिति को कैसे संभाला जाए और कैसे बबलू को फिर से सक्रिय किया जाए इसका कोई निर्णय वे नहीं कर पा रहे थे.

आखिर में मम्मी ने एक उपाय सोच ही लिया. पर मम्मी- पापा दोनों ही असमंजस में थे कि इस उपाय का कोई लाभ होगा या नहीं? पर कुछ तो करना ही था, अतः उन्होंने यह तय किया कि इस उपाय को आजमा कर देख लिया जाए

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

प्रीतम कुमार साहू द्वारा पूरी की गई कहानी

बबलू की उलझन दूर करने के लिए मम्मी-पापा ने अगले दिन से ही बबलू के सभी दोस्तों से मिलने की बात सोची और उन्हे पढ़ाई से जोड़ने के लिए अपने घर बुलाया. बबलू के सभी दोस्त अगले दिन सुबह से ही बारी बारी से आने लगे. बबलू अपने सभी दोस्तों से मिल बहुत खुश हुए और बहुत सारी बाते करने लगे. तभी बबलू के मम्मी कहने लगती है. स्कूल बंद है तो क्या हुआ पढ़ाई का अपना अलग महत्व है. पढ़ाई हम लोगो को जारी रखनी चाहिए.

आज से हम सब यही घर में ही आपस मे मिल जुल कर पढ़ाई करेंगे और खेल भी खेला करेंगे. बबलू के सभी दोस्त पढ़ने के लिए सहमत हो गए. बबलू अपने दोस्तों के साथ घर मे खूब पढ़ने लगे और खूब खेलने लगे. बबलू को घर स्कूल सा लगने लगा बबलू को घर का महोल बहुत अच्छा लगने लगा. बबलू के जन्मदिन पर मम्मी पापा ने बबलू के सभी दोस्तों के साथ पिकनिक में जाने का निर्णय लिया.

कोरोनाकाल में स्कूल बंद और बाहर आना जाना बंद होने से घर में रहकर बोर हो गया बबलू अपने सभी दोस्तों के साथ पिकनिक में जन्मदिन की खुशियाँ मनाता है और खुब मजे करता हैं. प्रकृती कि अनुपम छटा झरना को देख आनंदित हुए.हरे भरे पेड़- पौधों को देख मन पुलकित हुए. बबलू की नीरस जिन्दगी में उत्साह का संचार हुआ.

अब बबलू पहले की तरह पढ़ाई करने लगा,पेड़ पौधों की देख रेख करने लगा,सभी कामों में रुची लेने लगा इस तरह बबलू की उलझन दूर हुई.

सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी

एक ही तरह का जीवन जीते जीते हम बड़बडभी ऊब जाते हैं, फिर बबलू तो बच्चा ही था. मम्मी पापा ने ध्यान दिया कि बबलू बहुत सारा समय अपने मोबाइल गेम, टेलीविजन,गूगल, यूट्यूब में कार्टून देखना, आदि पर लगाता है. अपनी टेबल पर बैठे-बैठे ही सारा समय बिताना, शारीरिक कार्य का बिल्कुल अभाव यही बबलू की दिनचर्या हो गई थी. उसके स्वभाव में परिवर्तन आ रहा था. मम्मी पापा ने बबलू को इस स्थिति से बाहर निकालने के लिए, अच्छी संदेशपरक ज्ञानवर्धक किताबों का सहारा लिया.

उनके पड़ोस में रहने वाले शर्मा दंपति ने अपने घर के ऊपरी तल पर पुस्तकालय खोला था, जिसमें निःशुल्क किताबों की सुविधा थी. मम्मी पापा बबलू को, शर्मा जी के पुस्तकालय में ले गए. वहाँ पर बबलू ने देखा कि किताबों की दुनिया कितनी रोचक थी. रंग बिरंगी चित्रोंवाली, ज्ञान देने वाली, धार्मिक, सामाजिक, योग की किताबें, अमर चित्र कथा, चंपक, चंदामामा, पराग, टेल मी व्हाई, महापुरुषों की रोचक जीवनियाँ, पिंकी के कार्टून, लोक कथाएँ पञ्चतंत्र,हितोपदेश की कहानियाँ, राजा रानी की कहानियाँ, विक्रम बेताल की कहानियाँ, विज्ञान के आविष्कारों की कहानियाँ. इतनी अच्छी-अच्छी किताबें, बबलू के मन में इतनी उत्सुकता भर गई कि वह हर किताब को जल्दी से जल्दी देखना चाह रहा था. मम्मी पापा से कह रहा था, मम्मी मै इसे भी पढ़ लूँगा.

मम्मी ने कहा, बेटा तुम्हें किताबों से अनमोल खजाना मिल जाएगा, पर पहले तुम्हें अपनी दिनचर्या सुधारनी होगी, अभी तुम योग और कहानियों की किताबें ले जाओ.

सुबह जल्दी उठकर योगाभ्यास करो, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और प्रफुल्लित मन से किताबें पढ़ो. तुम्हें अच्छा लगेगा, मन सक्रिय होगा, शरीर में स्फूर्ति आएगी.

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग ठीक है, पर हमेशा उन पर निर्भर रहना ठीक नहीं है. अपने मस्तिष्क का सही उपयोग करो. बबलू के चेहरे पर मुस्कान आ गई उसने कहा मैं किताबों को जरूर पढ़ूँगा, मैं इन्हें अपने साथ लेकर जा रहा हूँ. मम्मी पापा के साथ ही, शर्मा आंटी के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी.

श्रीमती मंजू साहू द्वारा पूरी की गई कहानी

बबलू के मम्मी-पापा ने एक उपाय सोचा कि बबलू को हम अलग-अलग काम देकर उसकी दिनचर्या को व्यस्त रखे. बबलू के पापा ने बबलू को कहा- बबलू तुम अपने स्कूल के दोस्तों के नाम बताओ. बबलू उत्सुकता से कहा- सोनू, पवन, उमेंद, चेतन, राहुल ये मेरे पक्के दोस्त है.

बबलू की मम्मी ने पुछा- अच्छा बबलू, तुम्हारे सबसे प्रिय शिक्षक कौन है और क्यों? बबलू ने कहा- मुझे विज्ञान की शिक्षिका बहुत पसंद है, क्योंकि विज्ञान शिक्षिका मुझे बहुत ही रोचक व हमारे जीवन में हो रही घटनाओं से अवगत कराती है तथा कारणों को बताती है. इस तरह बबलू से उसकी रोचकता के अनुसार बातें करके बबलू के अंदर रूचि को बाहर निकलता देख, बबलू के मम्मी-पापा नित्य ही इसी तरह प्रश्नों के माध्यम से बबलू के मन को परिवर्तन कर पाए. बबलू के पापा ने बबलू को घर के राशन का समान लाने की जिम्मेदारी दे दी. रोज सुबह बबलू अपने खेतों की सैर करने जाता. इस प्रकार बबलू के मम्मी-पापा ने बबलू को घर के विभिन्न कार्यो से जोड़ रखा, जो बबलू को अच्छा लगने लगा.

प्रीतम कुमार साहू द्वारा पूरी की गई कहानी

बबलू की उकझन दूर करने के लिए मम्मी-पापा ने अगले दिन से ही बबलू के सभी दोस्तों से मिलने की बात सोची और उन्हे पढ़ाई से जोड़ने के लिए अपने घर बुलाया. बबलू के सभी दोस्त अगले दिन सुबह से ही बारी बारी से आने लगे. बबलू अपने सभी दोस्तों से मिल बहुत खुश हुए और बहुत सारी बाते करने लगे. तभी बबलू के मम्मी कहने लगती है. स्कूल बंद है तो क्या हुआ पढ़ाई का अपना अलग महत्व है. पढ़ाई हम लोगो को जारी रखनी चाहिए.

आज से हम सब यही घर में ही आपस मे मिल जुल कर पढ़ाई करेंगे और खेल भी खेला करेंगे. बबलू के सभी दोस्त पढ़ने के लिए सहमत हो गए. बबलू अपने दोस्तों के साथ घर मे खूब पढ़ने लगे और खूब खेलने लगे. बबलू को घर स्कूल सा लगने लगा बबलू को घर का महोल बहुत अच्छा लगने लगा. बबलू के जन्मदिन पर मम्मी पापा ने बबलू के सभी दोस्तों के साथ पिकनिक में जाने का निर्णय लिया.

कोरोनाकाल में स्कूल बंद और बाहर आना जाना बंद होने से घर में रहकर बोर हो गया बबलू अपने सभी दोस्तों के साथ पिकनिक में जन्मदिन की खुशियाँ मनाता है और खुब मजे करता हैं. प्रकृती कि अनुपम छटा झरना को देख आनंदित हुए. हरे भरे पेड़-पौधों को देख मन पुलकित हुए. बबलू की नीरस जिन्दगी में उत्सह का संचार हुआ.

अब बबलू पहले की तरह पढ़ाई करने लगा, पेड़-पौधों की देख-रेख करने लगा, सभी कामों में रुची लेने लगा, इस तरह बबलू की उलझन दूर हुई.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

स्कूल खुलने पर तैयारी

बालोद जिले के ग्राम सांकरा में मन्नूलाल अपने छोटे से परिवार के साथ रहता था. वह स्वयं पढ़ा- लिखा नहीं था. पर वह अपने बेटे जुगनू एवं बेटी रमशीला को पढ़ाना चाहता था. पिछले दो वर्षों से स्कूल और आंगनबाड़ी बंद थे. वह बच्चों को पढने भेज नहीं पा रहा था. उसने आनलाइन पढाई के बारे में सुन रखा था. पर उसके पास स्मार्टफोन नहीं था. वह इंटरनेट का खर्च भी नहीं उठा सकता था. उसकी पत्नी मीराबाई कक्षा पांच तक पढ़ी थी. उसके माता-पिता ने उसकी शादी छोटी उम्र में ही कर दी. शादी के बाद उसकी पढ़ाई छूट गयी.

मन्नूलाल के गाँव सांकरा के प्राथमिक स्कूल में महिला शिक्षिका ने उसे अपनी पत्नी को अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के बारे में बताया. इस कार्यक्रम में माताओं को अपने छोटे बच्चों को घर पर रहकर पढ़ाने के लिए तैयार किया जा रहा है. गाँव में बच्चों की पढाई के लिए मोहल्ला कक्षाएं भी शुरू हुई है. मन्नूलाल ने अपने बेटे जुगनू को वहां भेजने का निश्चय किया. इस तरह दोनों बच्चों की पढाई धीरे-धीरे शुरू हो गयी. इतने में मन्नूलाल को पता चला कि सरकार स्कूल खोलने जा रही है. लेकिन प्राथमिक स्कूल खोलने के लिए पालकों को लिखित में सहमति देनी थी. मन्नूलाल सोच में पड़ गया. क्या मेरे लिखने मात्र से सरकार स्कूल खोल देगी?

आगे क्या हुआ होगा, इसके बारे में आप सोचना शुरू करें और इस कहानी को पूरा कर हमें ईमेल से kilolmagazine@gmail.com पर भेज देवें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे. कहानी लिखने के साथ-साथ आप अपने आसपास ऐसे मन्नूलाल और मीराबाई को उनके सपनों को पूरा करने में सहयोग करें.

<u>ना जाने कब हम बड़े हो गए</u>

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू(शिक्षक)

ना जाने कब हम बड़े हो गए.
पैरोंपे अपने हम खड़े हो गए..

घुटनों के बल चलते थे हम.
उछल कूद करते थे हम..

आंचल में हमें छिपाती थी माँ.
दूध हमें पिलाती थी माँ..

गीत खुशी के,गाती थी माँ.
गाकर लोरी, सुलाती थी माँ..

ना जाने कब हम बड़े हो गए.
पैरोंपे अपने हम खड़े हो गए..

दर्द सहकर हँसना सिखाया.
अपना निवाला हमें खिलाया..

उंगली पकड़ के, चले हैं हम.
ममता के आँचल में,पले हैं हम..

ना जाने कब हम बड़े हो गए.
पैरोंपे अपने हम खड़े हो गए..

नींद से हमें,जगाती थी माँ.
होम वर्क हमें, कराती थी माँ..

बचपन से आगे हम बढ़ गए माँ.
जवानी की सिढ़ी में चढ़ गए माँ..

देखे थे ख्वाब जो, मेरे लिए माँ.
कर आये सच हम, तेरे लिए माँ..

ना जाने कब हम बड़े हो गए.
पैरोंपे अपने हम खड़े हो गए..

*****

वृक्ष

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू(शिक्षक)

अब वृक्ष हम लगायेंगे.
धरती को गुलों से सजायेंगे..

देकर पानी खाद उसे.
नित-नित उसे बढ़ायेंगे..

काट सके ना कोई उसे.
हम उसकी जान बचायेंगे..

खाकर उसके फल-फूल हम.
स्वस्थ जीवन बितायेंगे..

वृक्ष लगाकर, वृक्ष बचाने,
का अभियान चलायेंगे..

बिना वृक्ष के नहीं है जीवन.
जग को यह बतलायेंगे..

वृक्ष लगाओ, वृक्ष बचाओ.
सबको हम सिखलायेंगे..

*****

दर्पण

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू (शिक्षक)

सब के घरों में मैं रहती हूँ,
नाम है मेरा दर्पण.
ना किसी से मैं कुछ लेती,
करती हूँ मैं अर्पण..

सब कोई मुझको ही देखे.
बदले में खुद को ही देखे..

प्रतिबिंब मैं बनाता पूरा.
मेरे बिन श्रृंगार अधूरा..

गाड़ी के आगे मैं लगता.
पीछे का मैं चित्र दिखाता..

मुझे देख जो गाड़ी चलाता.
दुर्घटना से उसको बचाता..

बच्चे को बच्चे कहती मैं.
बूढ़े को बूढ़ा कहती मैं..

हर किसी से सच कहती मैं.
नहीं किसी से छल करती मैं..

*****

फुलवारी

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

हमर घर के फुलवारी,
देखव जी संगवारी.
जेमा बने हे सुंदर क्यारी,
रंग-बिरंगी कितनी सारी..

भंवरा अऊ तितली न्यारी,
लागत हे प्यारी-प्यारी.
हमर घर के फुलवारी,
देखव जी संगवारी..

*****

<u>नदियाँ</u>

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू(शिक्षक)

नदियाँ गाती सुन्दर गाना,
क्यों ना हम उनसे ये सीखें.

कल-कल करती गीत सुनाती,
दिन-रात हरदमवों गाती.

जात-पात का धर्म मिटाकर,
सब जीवों की प्यास बुझाती.

बून्द-बून्द बारिश का लेकर,
नदियों से सागर बन जाती.

निर्मल, शीतल जल धारण कर,
शीतलता का पाठ पढ़ाती.

चट्टानों से हरदम लड़ती,
अपनी राहे खुद वो गढ़ती.

कभी ना रुकती, कभी ना झुकती,
अपनी मंजिल तक वों चलती.

*****

स्कूल चलो

रचनाकार- पुष्पलता साहू

चलो साथियों स्कूल चलो,
चल कर पढ़ाई करना है.
पढ़-लिख कर एक दिन हमको,
भारत माँ का मान बढ़ाना है.

चीर कर धरती को हमें,
मोती भी ढूंढ लाना है.
पढ़-लिख कर एक दिन हमको,
चांद पर भी जाना है.

वक्त नहीं अब लड़ाई का,
भाईचारा भी फैलाना है.
पढ़-लिख कर एक दिन हमको,
आसमान में तिरंगा लहराना है.

मिटाकर अशिक्षा को अब,
शिक्षा की अलख जगाना है.
पढ़ लिख कर एक दिन हमको,
धरती में स्वर्ग बसाना है.

*****

आम

रचनाकार- श्रीमती सपना यदु

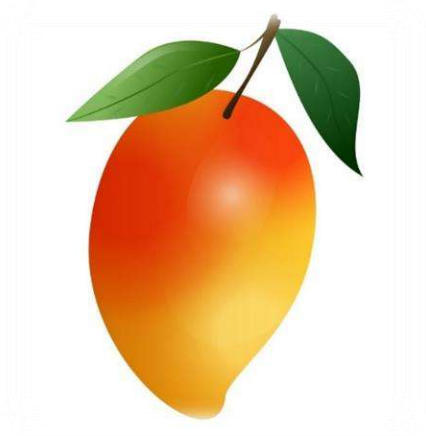

मीठे आम,रसीले आम,
पके-पके और पीले आम.
खूब मजे से हैं सब खाते,
चाहे हो इसका कोई भी दाम..

गर्मी के मौसम आते ही,
मिल जाते हैं आम के फल.
पेड़ों पर चढ़कर इसके,
बच्चे करते उठल-पुथल..

बच्चे, बूढ़े और जवान,
खूब मजे से हैं सब खाते.
बच्चे देखो मजे-मजे में,
हैं आम का रस बनाते..

आम देख सब के मुँह में,
देखो है पानी आ जाता.
तभी तो है यह सभी फलों में,
फलों का राजा कहलाता..

*****

समस्या का हल

टीकेश्वर सिन्हा

अंतर्संकुल स्तरीय शालेय क्रीडा प्रतियोगिता आयोजित थी. शिक्षक व बच्चे मैदान में व्यस्त थे. सभी बड़े खुश थे. शिक्षक अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग थे और बच्चे अपने खेल के प्रति. मैदान के एक किनारे मंच बना था. मंच के पास ही एक बुढ़िया खाई-खजानी का पसरा लगा कर बैठी थी. निर्धारित समय पर प्रतियोगिता शुरू हुई.

खेलते हुए बच्चों को खूब मजा आ रहा था, साथ ही वे खाई-खजानी का भी आनंद उठा रहे थे. मंच के पास बैठी बुढ़िया के पसरे के पास बच्चे कुछ भी खरीदने नहीं आ रहे थे. चुपचाप बैठी थी बेचारी. अपनी ओर बच्चों को आते देख वह खुश हो जाती पर बच्चों द्वारा कुछ नहीं खरीदने पर उदास हो जाती. क्या करती, मुफ्त में तो नहीं बाँट सकती थी. वह बहुत गरीब थी. घर चलाने का जिम्मा था उस पर. तभी एक बालक बुढ़िया के पसरा के पास आया. फलेस नाम था उसका. कक्षा चौथी में पढ़ता था. उसने पसरे पर रखे खउवा, चना-मुर्रा, मिक्सचर, नड्डा, चाकलेट्स व लालीपॉप पर नजर दौड़ाई. इमली की खट्टी-मीठी लालीपॉप देख कर उसका मन ललचा गया. उसका स्वाद वह पहले से जानता था. वह खरीदना तो चाहता था पर जेब में एक पैसा भी नहीं था. बुढ़िया ने फलेस से कहा- "काय लेबे बाबू. देखा, के पइसा धरे हस." फलेस बिना कुछ बोले मन मसोस कर जेब में हाथ डालते हुए वहाँ से चला गया.

प्रतियोगिता में व्यस्त शिक्षक प्रभात ठाकुर जी को बुढ़िया के खउवा-पसरा के पास बालक फलेस का बार-बार आने-जाने का माजरा समझ आ गया. बुढ़िया के पास गये. बोले - "कतेक खाई-खजानी बेच डारेस दाई...तोर दुकान बने नइ चलत हे का?

"हाव गुरुजी, काय करबे एक पइसा के नइ बेचे हँव. कोन्हों नइ आवत हे तुँहर लइका मन हा. कुछुच नइ बेचाय हे गुरुजी, बड़ा समसिया हे, बोहनी तक नइ होय हे." बुढ़िया ने कहा. फिर ठाकुर जी ने देखा कि पसरे के पास फलेस आकर खड़ा हो गया. उन्होंने फलेस से पूछा- "का चाहिए जी फलेस?"

"कुछू नहीं जी." फलेस ने झिझकते हुए कहा.

"बताओ न...कुछ खाओगे क्या? चलो मैं खिलाता हूँ तुम्हें." ठाकुर जी ने फलेस की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा.

"वो लालीपॉप खाहूँ जी." फलेस ने मासूमियत से कहा.

"तो तुम क्यों नहीं खरीद रहे हो?" ठाकुर जी पूछ बैठे.

"पइसा नइ हे." फलेस का जवाब आया.

अब ठाकुर जी को बुढ़िया व फलेस दोनों की समस्या समझ आ गयी. तुरन्त उन्होंने चना-मुर्रा, मिक्सचर, नड्डा, चाकलेट्स व लालीपॉप का एक-एक पैकेट खरीदा; और सबसे पहले बालक फलेस को दिया. फिर सबको बच्चों में बाँट दिया.

ठाकुर जी ने उस खजानी वाली बुढ़िया व बालक फलेस की समस्या का हल कर दिया था.

कोरोना

रचनाकार- राकेश बैस

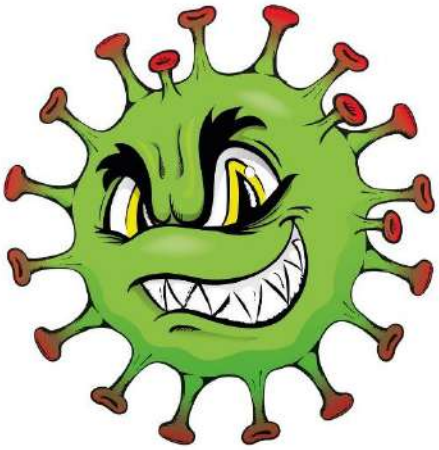

आया कोरोना, आया कोरोना,
सबको बहुत रुलाया कोरोना.

मास्क और दो गज की दूरी पर,
रहना है हमें सिखाया कोरोना.

कौन है अपना, कौन पराया,
इसकी पहचान कराया कोरोना.

ऑक्सीजन और स्वच्छ हवा का,
महत्त्व हमें है बताया कोरोना.

आत्म निर्भर भारत की ओर,
बढ़ना है हमें सिखाया कोरोना.

भारतीय वैक्सीन के दो डोज से,
अब है यह थर्राया कोरोना.

शादी, ब्याह और समारोह में,
खर्चे पर है रोक लगाया कोरोना.

इस मुश्किल के दौर में भी,
थोड़े में जीना सिखाया कोरोना.

राजा हो या रंक सभी को,
जीवन का पाठ पढ़ाया कोरोना.

*****

ओस की बूंद

रचनाकार- शालिनीपंकजदुबे

बादल की बेटी,
बरखा की बूंद,
घना कोहरा छाया है धूंध.

गिर पड़ूँ जब बन ओस की बूंद,
पेड़-पत्तों पर, घास-दूब में,
सूरज की किरणों से,
सतरंगी चमकू मैं ओस की बूँद..

बनके मोती
उज्जवल फिर
बिखर जाऊं
धरती माँ की गोद में,
मैं ओस की बूँद..

*****

माता-पिता

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

धरती पे भगवान का रूप,
बिन उनके संसार है कूप,
रोशन जहाँ उन्हीं से होता है,
किस्मत वाले हैं वो, जिनके माता-पिता होते हैं..

तराशते हैं जीवन पग-पग में,
निश्छल प्रेम उन्हीं का होता है.
सख्त दिखते बाहर से,
अंदर से वत्सल होता है..

त्याग सुखों का अपना करते,
तपाकर कुंदन हमें बनाते हैं.
छोटी-छोटी ख्वाहिशों के लिए हमारे,
दिन-रात वो मेहनत करते हैं..

नैतिकता का पाठ पढ़ाते,
सही गलत की पहचान कराते,
जरा-सी हरारत बदन को हुए जो
वे पूरी रात जागते हैं.
सुरक्षा कवच हैं माता-पिता,
हर बलाओं से हमें बचाते हैं..

*****

श्रीरामचरितमानस का प्रसंग

सीमा यादव

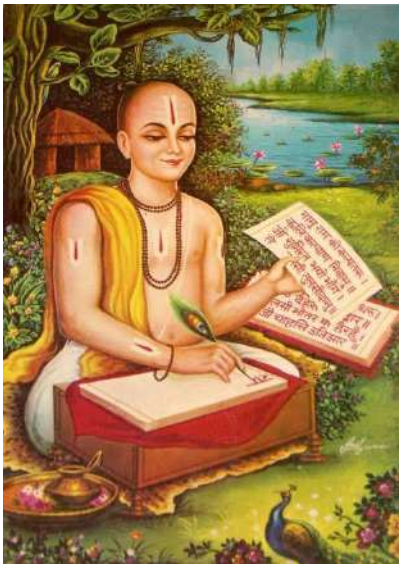

चौपाई

"सुमति कुमति सब कें उर रहहीं
नाथ पुरान निगम अस कहहीं
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना"

अर्थात् "सुमति और कुमति (सद्बुद्धि और दुर्बद्धि) सबके हृदय में निवास करती हैं. ऐसा पुराण, उपनिषद् एवं वेदों में कहा गया है. जहाँ अच्छी बुद्धि का वास होता है वहाँ तरह -तरह की सम्पत्ति निवास करती हैं, इसके विपरीत जहाँ कुबुद्धि हावी होती है वहाँ की वायु नाना प्रकार के कष्टों को देने वाली हो जाती है."

मित्रों! आइये आज मैं आप को सुमति और कुमति से उत्पन्न होने वाले परिणामों के बारे में बताना चाहती हूँ. हो सकता है आप मेरी बातों से सहमत न हों, पर यदि आप में से एक थोड़े से समूह को भी मैं अपनी बात समझा पाने में सफलता प्राप्त करती हूँ तो ये मेरे लिए बड़ी उपलब्धि होगी.

दोस्तों! हम अपने आस-पास घटित घटनाओं से कई बार स्तब्ध या मौन हो जाते हैं, क्योंकि कभी-कभी ऐसी घटनाएँ हो जाती हैं जिनके बारे में हमने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की होती है. तब हमारा मन मस्तिष्क हमें विचार मंथन करने पर विवश कर देता है कि आखिर ऐसा क्यों हुआ? यदि ये बात होती तो ऐसा कभी नहीं होता? या फिर काश! ऐसा किए होते तो ये दिन देखने नहीं पड़ते. जब व्यक्ति के पास सुख-शान्ति और सुकून होते हैं तो उसे उनकी क़ीमत समझ में नहीं आती. किन्तु जब कोई चीज उसके पास नहीं होती तो उन चीजों को पाने के लिए हजार प्रयत्न करते हैं. भले ही उसकी क़ीमत जो भी हो. यही मानवीय स्वभाव है.

मानव की इस जगत के सबसे बुद्धिमान प्राणियों में गिनती होती है. फिर भी मनुष्य अपनी आदत से बाज नहीं आता. जिसका जैसा स्वभाव होता है वह वैसा कार्य करने हेतु उत्साहित रहता है. मानव भी प्रकृति के ही अधीन होते हैं, उनके अपने हाथ में कुछ नहीं होता है. तभी तो न चाहते हुए भी बिना किसी प्रयोजन के उनके द्वारा ऐसा कृत्य कर दिया जाता है कि कल तक जो इतने आदरणीय, सम्माननीय माने जाते थे वे एक ही झटके में सबकी नजरों में घृणा के पात्र हो जाते हैं.

परीक्षा

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

डरते क्यों हो सब इससे, नहीं परीक्षा कोई भूत.
आत्मशक्ति से करो पढ़ाई, दृढ़ इच्छा और रहो मजबूत..
लक्ष्य साधना ध्यान लगाओ, बार-बार करो अभ्यास.
सफलता को पाना है तो, करना होगा अथक प्रयास..

रखो बनाकर समय सारिणी, पढ़ो लिखो उसके अनुसार.
आयेगा परिणाम सुखद ही, तेरी होगी जय-जयकार..
बेमतलब की बातें छोड़ो, मन को रहते ये उलझाय.
मिलकर अपने गुरू जनों से, उलझन सारी तुम सुलझाओ...

पाठ मनन करना सब अपना, सोच-समझ पढ़ना एकांत.
देख प्रश्न को मत घबराना, उत्तर लिखना होकर शांत..
अगली कक्षा जाना ही है, तुम हो अपने शिक्षादूत.
कभी नहीं डरना है इससे, कहो परीक्षा नहीं कोई भूत..

*****

बादल

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

काले बादल छा गये, नभ में चारों ओर.
घूम रहे पक्षी सभी, बच्चे करते शोर..

शीतल चलती है हवा, तन मन भी मुस्काय.
बूँद बूँद बरसे जमी, मन हर्षित हो जाय..

सुंदर दिखते बाग है, लहराते है फूल.
बारिश बूंदें देख कर, पत्ते जाते झूल..

छायी सावन की घटा, आयी है बरसात.
सोचे मानव देख कर, कैसे बीते रात..

सूखे सूखे वृक्ष के, मन में खुशियाँ छाय.
बारिश की फ़ूहार से, हरी भरी हो जाय..

*****

ये बात नहीं जरा सी!

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

तेज आने लगे जब बुखार,
बढ़ने अगर लगी हैं खासी.
तब याद रखो साथी.
ये बात नहीं अब जरा सी.
ये बात नहीं अब जरा सी.

अगर बदबू ना आये.
खुशबु का ना हो अहसास.
लौंग, कपूर, अजवायन की
पोटली अब सदा रखो पास.
पोटली अब सदा रखो पास.

सांस लेने में हो तकलीफ.
अगर सीने में हो दर्द.
साथी तब डॉक्टर की.
सलाह लेने में क्या है हर्ज.
सलाह लेने में क्या है हर्ज.

होने लगा है अगर जुकाम.
होने लगी गले में खराश.
थोड़ी आस्था और रखो धैर्य.
मन से होना नहीं हताश.
मन से होना नहीं हताश.

मास्क, सेनेटाइजर और दुरी,
सदा याद रखो बाते तीन.
अभी समय आया है साथी,
अपने घर में हो जाओ क्वारंटीन.
अपने घर में हो जाओ क्वारंटीन..

*****

एक पाती शिक्षक के नाम

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा

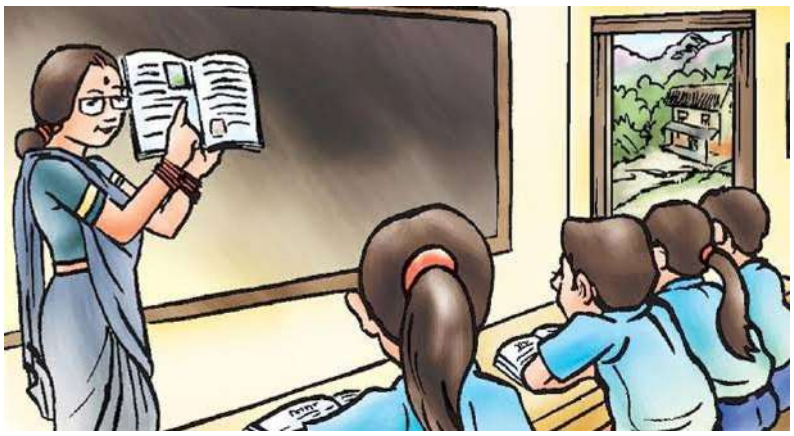

यह एक पाती आपको लिखने का साहस कर रही हूँ. जब से पढ़ने के साथ समझना सीखा "संवादहीन संप्रेषण" तो होता ही रहा है हमारे बीच. "सुक्खम-दुक्खम" की चुगली आपसे करती रही मैं बाल सुलभ मन से. मौसमों के अखबार में मेरे मन का जब रिजल्ट छपता था तो आप के ही हस्ताक्षर मुझसे संवाद करते थे. बाल मन से कैशोर्य के चंपई अंधेरों में धूप -छाँव तो आप ही बाँटते रहे.

जब तय शुदा तरीकों से परे शिक्षण की बात हो तब आप ही मेरे सामने इस उम्र में भी नए कलेवरों के साथ सदैव उपस्थित रहे. जानती हूँ कि यांत्रिक उपकरणों का प्रयोग आप जैसे शब्दों के महारथी के लिए कितना दुरुह रहा होगा पर आपने अपने अनुभव की शरबत में धैर्य की चीनी घोली. घर-घर दस्तक देते मुझे आप ही मिलते थे. सारे रोगों की चपेट में आकर भी आप सारी गणनाएँ करते रहे. मेरे भविष्य के लिए तमाम दुरूह, उबाऊ यांत्रिकी कार्यों का ककहरा आपने हमारे लिए सीखा.

इस बीच कितनी उथल- पुथल रही होगी आपकेअंतस में? पर हमारे मन के पहाड़े को आप बिना बोले पढ़ते रहे. इन परिस्थितियों में जीवन के गुणा-भाग से परे साँत्वना का इमला मन की स्लेट पर लिखवाते रहे. जिसमें सकारात्मकता की मात्राओं पर ही आपका विशेष ध्यान रहा.

हाड मांस की देह आपकी भी तो थकती होगी. मन भी पस्त होता रहा होगा. पर कभी नहीं कहा न कभी बताया. आड़ी तिरछी मकड़ी सी रेखा वाले अक्षरों पर शाबाशी देना. अनगढ़ रचनाओं पर वाहवाही करना और मेरी अशिष्टता. घंटों तक आपका मोबाइल पर अनावश्यक संदेशों का

यत्नपूर्वक उत्तर देना. ऊँगलियां आप की भी दुखती रही होंगी न? रीढ़ की हड्डी भी बहुत कुछ कहती रही होगी न? आपके चश्मे का नंबर भी बढ़ गया होगा न? पर हमने यह सब कब समझा? आपका यह आचरण क्या कोई समझ पाया? क्या कभी समझ पाएगा? आज आप जैसे भगीरथी ही ज्ञान की गंगा को इस विकट परिस्थिति में धारण कर हम तक पहुँचा रहे हैं. ज्ञान की सलिला को हम तक ला देना क्या कोई कर सकता है? ज्ञान के निवाले तो बाद में भोजन का निवाला भी आप घर-घर तक बिना नागा पहुँचा ही रहे हैं.

सामान्य परिस्थितियों के शिक्षक और इस लंबी असामान्य परिस्थिति में आपका नया कलेवर और अधिक सहज, सरल, मानवीय संवेदनाओं से भरा हुआ. क्या कुछ नही खोया आपने?

पर आपने समेट लिया मुझे..... हमेशा हमेशा की तरह... नि:शब्द

पहाड़ा गीत

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा

दो एकम दो
देखो अपने हाथ दो
दो दूनी चार
कर लो मुझे थोड़ा प्यार
दो तिया छः
बोलो तुम जय
दो चौक आठ
देखो मेरे ठाठ
दो पंचे दस
दो हाथों की अंगुली होती दस
दो छक्के बारह
तिरंगा रहे हमारा
दो सत्ते चौदह
हार कर मत रोना

दो अटठे सोलह
पहनो अपना चोला
दो निया अठारह
सारा देश हमारा
दो दहाम बीस
करो अब तुम बीस..

*****

वर्षा रे वर्षा

रचनाकार- कु.सुषमा बग्गा

पानी आया पानी आया
रंग बिरंगे छाता लाया,
रिमझिम -रिमझिम करता
पानी आया
हाथ में हरियाली लाया
कल कल करता,
पानी आया,
मनमोहित दृश्य लाया
देखो रे भाई देखो
पानी आया,पानी आया !!

*****

पेड़ो को मत काटो

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

एक एक पेड़ लगाओ, धरती को बचाओ.
मिले ताजा फल फूल, पर्यावरण शुद्ध बनाओ..
मत काटो तुम पेड़ो को, पुत्र समान ही मानो.
इनसे ही जीवन जुड़ा है, रिश्ता अपना जानो..

सोचो अगर क्या होगा, पेड़ सभी कट जायेंगे.
कहाँ मिलेगी शुद्ध हवा, तड़प तड़प मर जायेंगे..
फूल फल और औषधि तो, पेड़ो से ही मिलते हैं.
रहते मन प्रसन्न सदा, बागो में दिल खिलते हैं..

पंछी चहकते पेड़ो पर, घोसला बना कर रहती है.
फल फूल खाते सदा, धूप छाँव सब सहती है..
सबका जीवन इसी से है, फिर क्यों इसको काटते हो?
अपना उल्लू सीधा करते, लोगो को तुम बाँटते हो..

करो संकल्प जीवन में प्यारे, एक एक वृक्ष लगायेंगे.
हरा भरा धरती रखेंगे, जीवन खुशहाल बनायेंगे..

*****

हमें बताओ

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

कौन बदलता दुनिया का मौसम.
कौन बजाता चढ़ बादल धम-धम.
कौन गिराता पानी को झम-झम..
हमें बताओ....

कौन बताता फूलों को खिलना.
कौन सिखाता पंछी को उड़ना.
कौन बोलता सूरज नित उगना..
हमें बताओ...

कौन बीज को पौधा ही करता.
कौन पेट हाथी चींटी का भरता.
कौन समुन्दर से यह जल हरता..
हमें बताओ.....

कौन हवा, जल को कहता बहना.
कौन जुगनुओं से कहता जलना.
कौन कहे वृक्षों से फल फलना.
हमें बताओ.....

*****

मंजिल

रचनाकार- पुष्पलता साहू सहायक शिक्षक

ख्वाहिश नहीं किसी मंजिल की,
हर मुश्किल आसान होता है.
कभी गिल्ली डंडा तो कभी लुकाछिपी,
तो कभी कागज का नाव होती है.

ना पाने की चाहत ना खोने का गम,
हर गम से वह अनजान होता है.
मिट्टी के खिलौने और कागज की कश्ती,
हर चेहरे पर मुस्कान होता हैं.

दादी नानी के कहानी के संग,
मौज मस्ती और लड़कपन होता है.
मन के सच्चे मासूम से ये बच्चे,
कितना प्यारा इनका बचपन होता है.

*****

योग

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह

हम शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें,
हम मानसिक रूप से स्वस्थ रहें,
तनाव को जीवन से दूर करें,
चलो योग करें, सभी लोग करें.

शरीर में रक्त संचार बेहतर करें,
शरीर को ऑक्सीजन, पोषक तत्व मिले,
शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा मिले,
चलो योग करें, सभी लोग करें.

तंत्रिकाओं की कार्यप्रणाली बेहतर करें,
हृदय की गति को सामान्य करें,
श्वसन प्रणाली के विकार को दूर करें,
चलो योग करें, सभी लोग करें.

जीवन में सकारात्मकता लाने के लिए,
शरीर में नयी ऊर्जा को भरने के लिए,
बढ़ती उम्र का असर काम करने के लिए,
चलो योग करें, सारे लोग करें.

घर, कार्यस्थल के काम के दबाव को काम करने के लिए,
सही निर्णय सही समय लेने के लिए,
अच्छी याददाश्त, मन शांत रखने के लिए,
चलो योग करें, सभी लोग करें.

हमेशा ऊर्जावान रहने के लिए,
सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद,
प्राणायाम, अनुलोम-विलोम, सूर्य नमस्कार करें,
चलो योग करें, सभी लोग करें.

बच्चे, बुज़ुर्ग, जवान, सभी स्वस्थ रहे,
भारत माँ के लाल हमेशा स्वस्थ रहे,
भारत के नव योग का निर्माण करें,
स्वस्थ भारत का निर्माण करें,
चलो योग करें और निरोग रहे.

*****

तितली रानी

रचनाकार- के शारदा

तितली रानी, तितली रानी
कितनी सुंदर लगती हो...
पंख तुम्हारे रंग-बिरंगे,
फूलों को देख मुस्कुराती हो.

तितली रानी, तितली रानी
कितनी सुंदर लगती हो...
कभी इस डाल कभी उस डाल
फूलों पर मंडराती हो...
तितली रानी, तितली रानी
कितनी सुंदर लगती हो...

*****

राम भरोसे

रचनाकार- अभिषेक शुक्ला

बचपन से हम कई बातें, मुहावरे और शब्द सुनते और बोलते हुये बड़े होते हैं. बहुत समय बाद कोई ऐसी बात हमारे सामने आ जाती है जिसे कालांतर मे हम भूल चुके होते हैं.

ऐसा ही अभी मेरे साथ हुआ, जब एक दिन मैने समाचार पत्र मे हैडलाईन पढ़ी कि 'स्वास्थ्य सेवाएँ राम भरोसे.' मुझे अचानक अपने बचपन के दिन याद आ गए. जब मैं जूनियर कक्षा मे अध्ययनरत था, तब परीक्षाओं के उपरांत हम सब साथी किसी विषय के प्रश्न पत्र के बारे मे बात करते तो एक-दूसरे से कहते थे कि पेपर तो कर आये अब अच्छे अंक मिलना और पास होना 'राम भरोसे' ही है.

आज समाचार पत्र मे पढ़ने के बाद यह 'राम भरोसे' की बात पुन: मानस पटल पर जीवन्त हो गयी.

'राम भरोसे' का शायद यह अर्थ है कि आपके पास जो है आप उससे संतुष्ट रहो. जब आप उससे ज्यादा किसी चीज़,मेहनत या प्रयास की आवश्कता नही समझते. जब यह भावना आ जाये कि जो होगा ठीक होगा या जो भी होगा देखा जायेगा. रामभरोसे को परिणामों के प्रति निडर, लापरवाह या विश्वास के रूप मे भी परिभाषित किया जा सकता है.

जब राम भरोसे के साथ विश्वास जुड़ जाता है तो यह बात साधारण न होकर अध्यात्मिक रूप ग्रहण कर लेती है. तब राम भरोसे का तात्पर्य प्रभू राम के भरोसे हो जाता है. जिस कार्य मे श्रीराम का सहारा हो, वह कार्य निश्चित ही सफल होता है. लेकिन ऐसा नही है कि आप हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएँ और कहें कि अब प्रभु ही जानें. यह संसार कर्म प्रधान है. इसलिये हर व्यक्ति को अपने कर्त्तव्य का पालन पूर्ण मनोयोग से करना चाहिए.

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है,

"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा.
जो जस करहि सो तस फल चाखा.."

इसलिये व्यक्ति,संस्था या सरकार, सबको यह बात समझ लेनी चाहिए कि अपने दायित्व का निर्वहन पूर्ण निष्ठा से करें साथ ही भविष्य और आपातकाल हेतु उचित प्रबंध भी करें.अपनी कमियों और बुराईयों को छिपाने के लिये राम भरोसे की चादर ओढ़ लेना पूर्णरूपेण अनुचित है.

जीवन की प्रारम्भिक शिक्षा का शुभारंभ प्रभु श्रीराम की बाल लीलाओं को सुनकर और देखकर होता है. विचित्र किन्तु सत्य है कि एक साधारण व्यक्ति का पूरा जीवन राम भरोसे ही व्यतीत होता है और अन्त मे 'राम नाम सत्य है' के साथ जीवन लीला समाप्त होती है. इसी नाम के साथ वैतरणी को पार कर मोक्ष की प्राप्ति होती है.

इसलिये यह बात समझ लेनी चाहिये कि राम भरोसे शब्द अपने आप मे पूर्ण और सार्थक है, इसका अनुचित प्रयोग सिर्फ़ लोगो की संकीर्ण मानसिकता व अज्ञानता को दर्शाता है. पत्रकारिता और लेखन क्षेत्र मे शब्दों के चयन और उनके उचित प्रयोग पर विशेष ध्यान देना चाहिये अन्यथा सारी व्यवस्था राम भरोसे ही हो जाती है.

ओ काले-काले बादल कहाँ चले

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

नन्ही परी बादल से बोली,
ओ काले -काले बादल कहाँ चले।

उमड़ते घुमड़ते यहाँ-वहाँ चले,
कौन देश से तुम आए हो,

साथ अपने बरखा लाए हो,
सूरज की तेज धूप ने झुलसा डाला.

गर्मी के मौसम ने तड़पा डाला,
तुम बहुत दिनों में आते हो.

तुम भी हमें बहुत सताते हो,
बादल बोला !ओ नन्ही परी!

मैं दूर आसमान से आया हूँ,
उमड़ते- घुमड़ते तुम्हारे आँगन में ।

बूंदों की बौछार करने आया हूँ,
साथ अपने बारिश भी लाया हूँ ।

सूरज के तेज धूप ने हमें बुलाया है,
वाष्प बनाकर हमें बादल बनाया है ।

अब तक ग्रीष्मकाल की बारी थी,
अब गरजते वर्षा ऋतु आयी हैं.

जल्दी जाओ ! बोला नन्ही परी ने,
तुमको बारिश लेकर बुलाया है ।

*****

छोटी सी गौरैया पानी में फुदकती है

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

छोटी सी गौरैया पानी में फुदकती है,
अपनी नन्ही सी चोंच पंखों पर रगड़ती है.

छोटे- छोटे पैरों से उछलती है कूदती है,
ढूंढ -ढूंढ कर अपने लिए दाना चुनती है.

उड़ -उड़ कर कभी पेड़ों पर चढ़ जाती है,
घूम- घूम कर फिर आंगन में लौट आती है.

चूं- चूं करके अपनी भाषा में चहकती है,
जाने अपनी बोली में क्या -क्या कहती है.

कभी दूर निकल जाती है तो सूना लगता है,
उसके बिना आँगन खाली -खाली लगता है.

जब वो आती है तो मैं बहुत खुश हो जाता हूँ,
मेरी गौरैया के लिए मैं रोज दानें बिखराता हूँ.

*****

मेंढक गुरु जी

रचनाकार- बलबीर सिंह बिस्ट

प्रातः जब गया बाग में भ्रमण को,
खिलते कमल देख, गया स्वयं में खो.

तालाब किनारे बैठ उन्हें निहारता रहा,
लिखने को कुछ छंद मैं विचारता रहा.

अनेक कमल खिले, थे उनके दो रंग,
नयन मेरे भी रह गए देखकर उनको दंग.

सफेद भी भाया मुझे, गुलाबी भी भाया,
किसे सुंदर मानूं, फैसला ना कर पाया.

इतने में एक मेंढक जी धूप सेंकने आए,
पा कर मुझे दुविधा में, थोड़ा सकपकाए.

हिम्मत कर के मेंढक ने पूछ लिया प्रश्न,
किस दुविधा में हैं श्रीमान, आप मग्न.

मैंने उसे अपनी दुविधा बतलाया,
सुन कर समस्या मेंढक ने दिमाग़ चलाया.

बोला खूबसूरती किसी रंग में नहीं होती है,
खूबसूरती तो देखने वाले के मन में होती है.

मेंढक जी ने जीवन का सच्चा पाठ पढ़ाया,
धन्य! गुरु जी कहके मैंने भी शीश नवाया.

*****

नटखट नन्ही

1. मम्मी: नन्ही, क्या तुम बता सकती हो कि टीवी और अखबार में क्या अंतर है?
   नन्ही: एक अंतर तो यही है कि हम टीवी में रोटी नहीं लपेट सकते.

2. टीचर: अगर किसी की टाँग टूट जाए तो उसे क्या करना चाहिए?
   नन्ही: उसे लंगड़ाकर चलना चाहिए. और वह कर भी क्या सकता है?

3. पापा: नन्ही तुम्हें पता है कि छिपकली दीवार पर क्यों चलती है?
   नन्ही: हम सब भी तो जमीन पर चलते हैं, छिपकली ने कभी कुछ कहा क्या?

4. नन्ही: मम्मी देखो मेरी सफेद फ्रॉक में लाल फ्रॉक का रंग लग गया है.
   मम्मी: हाँ नन्ही, लाल फ्रॉक का रंग कच्चा था न.
   नन्ही: तो अब सफेद फ्रॉक पर लगकर यह पक्का कैसे हो गया? छूट ही नहीं रहा.

5. नन्ही: पापा, हमारे पड़ोसी बहुत गरीब हैं क्या?
   पापा: नहीं तो, पर तुम ऐसा क्यों कह रही हो?

दीवार घड़ी

रचनाकार- अनीता श्रीवास्तव

होती है सबके घर में,
इक दीवार घड़ी,

इसमें देखें सभी समय,
जरूरत यह बड़ी.

समय देख, भोजन करना,
समय देख, सोना.

समय से पहुँचो शाला,
लेट नहीं है होना.

हम आदर करें समय का,
हो समय का ध्यान.

तब ही मिल सकेगा हमें,
जगति में सम्मान.

*****

लोरी

रचनाकार-अनीता श्रीवास्तव

लल्ला, जल्दी से सो जाओ,
मीठे सपनों में खो जाओ.

निंदिया रानी बुला रही है,
वायु झूला झुला रही है.

चिड़िया चूजे संग सो गई,
आंख गाय की बंद हो गई.

दादा सोए पैर पसारे,
नाक बजी खर्राटे मारे.

देर रात तक जगो न बेटा,
तुम जल्दी सो जाओ बेटा.

जल्दी सोते, जल्दी जागे,
सदा रहें जीवन में आगे.

*****

छुक-छुक

रचनाकार- हर प्रसाद रोशन

अपना मुंह जब भी खोलूं,
छुक-छुक, छुक-छुक बोलूं.
पटरी पर चलती जाऊं,
नागिन सी ढलती जाऊं.
गांव, शहर सब में डोलूं,
छुक-छुक, छुक-छुक बोलूं.
ठीक समय पर आती हूँ,
लेट हुई पछताती हूँ.
मंजिल पाकर खुश होलूं,
छुक-छुक, छुक-छुक बोलूं.
भीड़ देख ना घबराऊं,
खूब सवारी ले आऊं.
रंग प्रेम के मैं घोलूं.
छुक-छुक, छुक-छुक बोलूं.

*****

हमारे प्रेरणास्रोत- पिंगली वेंकैया

हम सभी जानते हैं कि हमारे देश का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है. आज हम आपको तिरंगे की रूपरेखा तैयार करने वाले पिंगली वेंकैय्या के बारे में बताने वाले हैं जिनका जन्मदिन भी अगस्त माह में ही आता है, तो आइए उनके बारे में कुछ और जानते हैं.

भारत के राष्ट्रीय ध्वज की रूपरेखा तैयार करने वाले पिंगली वेंकैय्या का जन्म आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा ज़िले के "दीवी" तहसील के "भटालापेन्नमरू" नामक गाँव में 2 अगस्त, 1876/1878 को हुआ था. उनके पिता का नाम पिंगली हनुमंत रायुडू एवं माता का नाम वेंकटरत्नम्मा था. पिंगली वेंकैय्या भटालापेन्नमरू एवं मछलीपट्टनम से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद 19 वर्ष की उम्र में बम्बई (अब मुंबई) चले गए. वहाँ उन्होंने सेना में नौकरी कर ली, जहाँ से उन्हें दक्षिण अफ्रीका भेज दिया गया.

सन 1899 से 1902 के बीच दक्षिण अफ्रीका के "एंग्लो बोअर" युद्ध में उन्होंने भाग लिया. दक्षिण अफ्रीका में वेंकैय्या की मुलाकात महात्मा गाँधी से हुई. वे गांधीजी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए. दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश लौटने पर बम्बई (अब मुंबई) में रेलवे में गार्ड की नौकरी करने लगे. इसी बीच मद्रास (अब चेन्नई) में प्लेग महामारी के चलते कई लोगों की मौत हो गई, इससे उनका मन व्यथित हो उठा. उन्होंने रेल्वे की नौकरी छोड़ दी और मद्रास आकर प्लेग रोग निर्मूलन इंस्पेक्टर के पद पर तैनात हो गए. बाद में वे उर्दू और जापानी भाषा का अध्ययन करने लाहौर चले गए.

वेंकैय्या कई विषयों के ज्ञाता थे, उन्हें भूविज्ञान और कृषि से विशेष लगाव था. 1906 से 1911 तक पिंगली कपास की विभिन्न किस्मों के अध्ययन में लगे रहे. उन्होंने अमेरिका से कम्बोडिया नामक कपास के बीज का आयात किया और इस बीज को भारत के कपास बीज के साथ अंकुरित कर भारतीय संकरित कपास का बीज तैयार किया. उनके इस शोध कार्य के लिये इन्हें पट्टी वेंकय्या के नाम से जाना जाने लगा.

काकीनाड़ा में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान वेंकैय्या ने भारत के राष्ट्रीय ध्वज की आवश्यकता पर बल दिया. इस विचार से सहमत होकर गाँधीजी ने उन्हें राष्ट्रीय ध्वज का प्रारूप तैयार करने का सुझाव दिया.

पिंगली वैंकया ने पाँच सालों तक तीस विभिन्न देशों के राष्ट्रीय ध्वजों पर शोध किया और अंत में तिरंगे के लिए सोचा. 1921 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के विजयवाड़ा अधिवेशन में पिंगली वेंकैय्या ने महात्मा गाँधी को अपने द्वारा डिज़ाइन किया लाल और हरे रँग से बनाया झण्डा दिखाया. इसके बाद काँग्रेस के अधिवेशनों में दो रंगों वाले झण्डे का प्रयोग किया जाने लगा लेकिन तब इस झण्डे को कांग्रेस से अधिकारिक स्वीकृति नहीं मिली थी.

इस बीच जालंधर के हंसराज ने झण्डे में चरखा बनाने का सुझाव दिया. चरखे को प्रगति और आम आदमी का प्रतीक माना गया. बाद में पिंगली वेंकैया ने शांति के प्रतीक सफेद रंग को भी राष्ट्रीय ध्वज में शामिल किया. 1931 में कांग्रेस ने कराची के अखिल भारतीय सम्मेलन में केसरिया, सफ़ेद और हरे तीन रंगों से बने इस ध्वज को सर्वसम्मति से स्वीकार किया. बाद में राष्ट्रीय ध्वज में इस तिरंगे के बीच चरखे की जगह अशोक चक्र ने ले ली.

इस ध्वज को लेकर स्वतंत्रता के सिपाहियों ने अनेक आन्दोलन किए और अंततः भारत ब्रिटिश शासन से 15 अगस्त 1947 को मुक्त हो गया. उन दिनों पिंगली वेंकैय्या का बनाया यह झण्डा झण्डा वेंकैय्या के नाम से लोकप्रिय हो गया था. 04 जुलाई 1963 को पिंगली वेंकैय्या का देहावसान हो गया. भारत सरकार ने उनके सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया था.

पिंगली वेंकैय्या को भारत के राष्ट्रीय ध्वज की रूपरेखा तैयार करने के लिए हमेशा याद किया जाएगा.

*****

बचपन मे प्रतिज्ञा

रचनाकार- कमलकिशोर ताम्रकार

बस्ता लिए आ रहा, प्यारा नन्हा रमन,
बोझ तले दब रहा था, सुनहरा बचपन.
दिखता यह बच्चा, लगता हैं बीमार,
रोटी के लाले पड़े, गरीबी का शिकार.

माँ सही नहीं जाती, यह भूख की ज्वाला,
तू ही बता कैसे जाऊं, मै पढ़ने को शाला.
अब नही जपना मुझे, वर्ण अक्षरों की माला,
स्कूल का नाम न लेना,लगाओ मुँहपे ताला.

माँ देख मेरी दुर्दशा, तुमको नही खलता,
होता सफल वहीं जो, अभावों में पलता.
अब्राहमलिंकन का, बचपन कैसे बीता,
करता तेरे जैसे तो, क्या राष्ट्रपति बनता.

जा, मत जा, शाला, तू नहीं है मेरा लाला,
था पुत्र मेरा कोई, जिसे मैने खो डाला.
माँ तेरे आँसू की, कीमत मैं चुकाऊंगा,
भूखे रह कर भी, मै पढ़ने को जाऊँगा.

माँ की गोद मे हैं जन्नत,सबको ये बताऊँगा.
मेरे नाम से जाने तुम्हें, ऐसा कर दिखाऊँगा.

*****

मेरा परिवार

रचनाकार- शिवचरण चौहान

अस्सी नब्बे पूरे सौ,
मेरे दादा खाते जौ.
नब्बे के मेरे कक्का,
खाते चना और मक्का.

गाने गाती हैं काकी,
रोज चलाती हैं चाकी.
नाना जी के बत्तीस दाँत,
मंजन करते हैं दिन रात.

नानी जी रहतीं बीमार,
पीती रहतीं जूस अनार.
फूफा जी खाते हैं पान,
उनके बड़े बड़े हैं कान.

मेरी प्यारी लाल बुआ,
मुझे खिलातीं मालपुआ.
लंबे है मेरे मामा,
करते घर में हंगामा.

मेरे चाचा हैं गोपी,
सिर पर रखते हैं टोपी.
मेरी चाची हैं टीचर,
कहती चल घर के भीतर.

यह सब हैं मेरा परिवार,
इन सबसे करता मै प्यार.
जन्म दिवस है मेरा आज,
जमा हुए हैं सब सरताज.

*****

बचपन

रचनाकार- केशव पाल

तेज घटाएँ छा जाती और,
उमड़-घुमड़कर बादल बरसता.
मै इठलाते कोने मे छुप,
बार-बार बूदों को पकड़ता.

कागज की नाव बनाकर,
मैं गलियों मे चलाता.
काश.....! मेरा बचपन,
फिर से आ जाता..

तन मे ओढे रजाई मैं,
अलाव से हाथ सेंकता.
मैं भी खेलता गुल्ली डंडा,
और हाथों से गेंद फेकता.

पापा मुझको थप्पड़ लगाते,
पढ़ने को घर ले आता.
काश.....! मेरा बचपन,
फिर से आ जाता..

कड़कड़ाती धूप मे घर से निकल,
तालाबों मे डूबकियाँ लगाता.
मम्मी ढूंढ़ती दिनभर मुझको,
शाम होते ही मैं घर आता.

उन्मुक्त हो मैं भी खेलता,
और रेतों के घरौंदें बनाता.
काश.....! मेरा बचपन,
फिर से आ जाता.

काश.....! मेरा बचपन,
फिर से आ जाता..

*****

पढ़ई तुँहर दुआर

रचनाकार- श्रीमती शालिनी दुबे

स्कूल चल रहे थे, सब कुछ सामान्य रूप से चल रहा था कि एकाएक शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए.

क्योंकि कोरोना वायरस के संक्रमण से सबसे पहले बच्चों को बचाना था. किसी प्रकार की तैयारी का समय ही नहीं मिल पाया. न परीक्षा हो पाई, न ही बच्चों को कुछ समझाईश देने का मौका मिला. जैसे छुट्टियाँ शुरू होने के पूर्व शिक्षक बच्चों को गृहकार्य देते हैं, निर्देश देते हैं. बच्चों को लेकर मन में चिंता बढ़ने लगी थी कि घर पर रहकर वे कैसे पढ़ाई से जुड़े रहेंगे?

इधर कोरोना वायरस का संक्रमण रोकने के लिए केंद्र सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन कर दिया. बच्चों की पढ़ाई का नुकसान न हो इसलिए एक योजना लाई गई ``पढ़ई तुंहर दुआर" जिसका उदघाटन मुख्यमंत्री जी द्वारा 7 अप्रैल 2020 को किया गया. एक माह बाद ही इस योजना की सफलता का आँकड़ा 27 करोड़ पेज व्यू तक पहुँच गया. 20 लाख विद्यार्थियों ने पंजीयन करवा लिया और एक लाख 70 हजार से अधिक शिक्षक ऑनलाइन शिक्षा प्रदान कर रहे हैं.

छतीसगढ़ के स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा संचालित ऑनलाइन शिक्षा पोर्टल में 'पढ़ई तुंहर दुआर' कार्यक्रम की बिना किसी खर्च के की गई. चिंता का विषय था कि आने वाले सत्र की तैयारी नहीं हो पा रही है. इस बीच स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा एक ऐतिहासिक पहल की गई. एक तरह की अभिनव पहल, जिसमें बच्चों ने अपना रजिस्ट्रेशन एक सामान्य प्रक्रिया द्वारा किया. इस वेब पोर्टल पर ऑनलाईन पढ़ाई आकर्षक तरीके से कराई जा रही है. बच्चे भी अपनी सुविधानुसार विषय का चयन कर ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ते हैं. शिक्षकों के साथ चर्चा करते हैं. वास्तविक कक्षाओं की तरह होमवर्क से लेकर फीडबैक, शंका का समाधान भी किया जा रहा है.

सिर्फ एक क्लिक पर बच्चों को शिक्षा उपलब्ध हो रही है. जिसका लाभ सरकारी व निजी स्कूल के विद्यार्थी उठा रहे है. उत्कंठा ऐसी जागी कि बच्चें जुड़ते चले गये और इतना रम गये की कब गर्मी की छुट्टियाँ आई कब गयीं पता ही नही चला. बच्चे ननिहाल जाना भी भूल गए.

जुलाई करीब आ गयी. जब हँसते-खिलखिलाते, स्कूल यूनिफॉर्म पहने, पीठ पर बैग लादे, आँखों में भविष्य के न जाने कितने सपने लिए. मुट्ठी में वक्त को थामे. नई ऊर्जा के साथ स्कूल के लिए नन्हे कदमो से डग भरते बच्चे आहहा! ये सुंदर दृश्य देखकर न सिर्फ शिक्षक बल्कि हर इंसान के चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाती है. यही मौसम, यही माह जब स्कूल खुलता है. हाँ क्या हुआ? जो स्कूल इस बार कुछ विलम्ब से खुले.

भला किसने हिम्मत हारी है,
पढ़ाई तो अब भी जारी है.

अब इस योजना के तहत बच्चे पढ़ाई से वंचित नही बल्कि वो इतिहास बना रहे है. आने वाली पीढ़ी गर्व से फूली नही समाएगी कि 'संकट की घड़ी में बच्चों ने कैसा साहस दिखाया. उनके गुरूओं की मेहनत, परिश्रम ने मिलकर शिक्षा जगत में शिक्षक व छात्र का सुंदर चित्र बनाया.

बहुत से प्रश्न मन में उठते है कि यह कैसे सम्भव हुआ? कुछ आलोचनाएँ भी हुईं पर जिनकी इच्छाशक्ति प्रबल थी वो निकल पड़े स्वर्णिम इतिहास रचने. सच कहूँ तो जिगर में हौसला हो तो समंदर भी रास्ता देता है.

बस एक शुरुआत थी आने वाले हर पल को बेहतर बनाने की.
पूरा विश्वासहै कि "आज से बेहतर आने वाले कल की तस्वीर होगी."

*****

धान के विरवे

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह नीहार

उमड़ - घुमड़कर बरसा बादल,
छम-छम करके हरसा बादल.

लबालब पानी से क्यारी,
धान रोपने की तैयारी.

हल बैल ले चला किसान,
गोड़े मिट्टी रोपे धान.

रोप रहे युवा नर - नारी,
पौधों बीच फासला जारी.

एक सीध में चले लगाते,
हँसते- मुस्काते- बतियाते.

दिन भर धूप - छाँव का खेल,
खेत - खेत में रेलमपेल.

विरवे झूमें, गिर - गिर जाते,
पुरवाई संग खुशी मनाते..

*****

<u>कलम की ताकत</u>

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

समझ कलम की ताकत को अब, क्या से क्या कर देती है.
कभी शांति की वार्ता लिखती, कभी युद्ध कर देती है..

कभी किसी के प्राण बचाती, कभी प्राण हर लेती है.
अपराधी को सीधा करती, फाँसी भी दे देती है..

बने घाव जो तलवारों से, जल्दी ही भर जाता है.
अगर कलम से लिखा गया तो, कभी नहीं मिट पाता है..

*****

संस्कार चाहिए

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना"मधुर"

घटती घटनाएँ कहतीं हैं, मानवता धर्म शर्मसार हो चुकी.
मानवता के पुजारी अब तो आओ, धरा बेज़ार हो चुकी.

कफन का टुकड़ा भी नसीब नहीं हो रहा है देखो मधुर.
दो गज ज़मीन नसीब नहीं, धूमिल सारे संस्कार हो चुकी.

बंद बोतलों में पानी, अब तो सासें भी बिकने लगी हैं.
लगता है प्रकृति से बहुत ही ज्यादा खिलवाड़ हो चुकी.

काट धरती वीरान पड़ी है, जिससे गली सुनसान पड़ी है.
अब भी सुधर जाओ मधुर, धरती अब बेज़ार हो चुकी.

चंद रुपयों खातिर जिंदगी दांव पर, इंसानियत शर्मसार है.
बहुत कमाया जिंदगी में पैसे, लेकिन सब बेकार हो चुकी.

बीमारी के नाम पर देखो कितनी हो रही है कालाबाजारी.
भूख से मर रहे हैं लोग, अब इंसानियत तार-तार हो चुकी.

दो दो हाथ मिल बढ़ो सभी, चरामेति सा संस्कार चाहिए.
अब तो अवतार लो प्रभु, मनुज का जीवन खार हो चुकी.

*****

सुग्घर ढेंस

रचनाकार- जितेंद्र सिन्हा

लाल, अमारी, पालक चेच
गली-गली म घुमके बेंच
दार संग म गजब मिठाथे
तरिया के जी सुग्घर ढेस

तुमा, लौकी अउ मखना
घपटे हे बारी मा जरी
आलू भाटा संग मिठाथे
मुनगा के संग लेड़गा बरी

रमकेलिया ल भुंजौ बराघौ
या अम्मट म राधौ झोर
जमके फरे हे बरबटी रानी
कनिहा नवा-नवा के टोर.

*****

बुरे दौर को भूल जाते हैं

रचनाकार- सुन्दर लाल डडसेना "मधुर

गुज़रे बुरे दौर को अब भूल जाते हैं.
आओ मिलकर नया भारत बनाते हैं.
चलो मिलकर नया भारत बनाते हैं.

उम्मीदों के फूल सँजोकर, भविष्य नया बनाते हैं.
नवनिर्माण हो रहा भारत का, साहस के पँख लगाते हैं.
हौसलों के नींव खोदकर, मन का तमस मिटाते हैं.
युवाओं का सुंदर भारत, प्रेरणा का दीप जलाते हैं.
गुज़रे बुरे दौर.....1

काट के धरती किये वीरान, चलो वृक्ष लगाते हैं.
साँसों का मोल पता चला, अब तो सुधर जाते हैं.
सूख न जाये अपनी धरती, उसका श्रृंगार कराते हैं.
बंजर हो गई धरती अपनी, मिलकर वृक्ष लगाते हैं.
गुज़रे बुरे दौर.....2

जो हार गए हैं मन से, उन्हें भला चंगा बनाते हैं.
सड़े हुए पानी को, निर्मल पावन गंगा बनाते हैं.
बिछड़े हुए हैं कितने यहाँ, उन्हें राह दिखाते हैं.
जो गलती हुई है हमसे, उसे फिर ना दोहराते हैं.
गुज़रे बुरे दौर.....3

घर कर गया है मन में, उस डर को मिलकर भगाते हैं.
भयमुक्त हो भारत अपना, उम्मीदों के किरण जगाते हैं.
गर खो गई है साहस मन की, उन्हें ढाँढस बँधाते हैं.
भयभीत हुआ है मन तो मधुर, प्रेम सौहार्द्र फैलाते हैं.
गुज़रे बुरे दौर.....4

*****

पापा

रचनाकार- सरिता लहरे 'माही'

पापा तुम्हारे प्यार के छाँव में,
रख लो मुझे फूल बनाके.

टूट के बिखर न जाऊँ मैं कहीं,
मुझे रख लो अपनी बगिया में सजा के.
सुन्दर खुशबू मैं बिखराऊँगी,
तुम्हारी बगिया की शान मैं बढाऊँगी.

बनके ताज तुम्हारे पगड़ी की,
गर्व से मैं इठलाऊँगी.
पापा तुम्हारे चरणों की धूल,
माथे अपने मैं लगाऊँगी.

तुम्हारे हर कदमों में पापा,
फूल बन मैं बिखर जाऊँगी.
तुम्हारे प्यार की छाँव में पापा,
हर मंजिल तक मैं पहुँच जाऊँगी.

पापा तुम्हारे प्यार की छाँव में,
मुझे रख लो फूल बना के.
टूट के बिखर गई कभी तो,
फिर कभी खिल न पाऊँगी.

*****

भोलापन

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

भोलापन का लिये चेहरा, घूम रहे सब लोग.
गलती सभी छुपाकर बैठे, बढ़ जाते फिर रोग..

समझ न पाये कोई जग में, चलते अपनी चाल.
पीछे पीठ चलाते गोली, फिर पूछे क्या हाल..

भोले भाले बनते सारे, कोई समझ न पाय.
अपने ही जब दुश्मन निकले, देख सभी डर जाय..

विडम्बना ये कैसी आयी, मानव बदले रंग.
खुशियाँ सारी लूट गयी है, हुए सभी अब दंग..

सतरंगीदुनियाँ को देखो, फँसी हुई है जाल.
खुद ही गड्डा खोद रहे हैं, फिर पूछे क्या हाल..

*****

त्रिया चरित्र

सीमा यादव

"त्रिया चरित्र" अर्थात् तीन प्रकार के लक्षण या विशेषता या फिर पहचान. त्रिया चरित्र शब्द का प्रयोग आख्यानों में नारियों के लिए किया गया है. कई लोग अपनी नासमझी के कारण नारी जाति को हेय नजरों से देखते हैं वे त्रिया चरित्र का अर्थ अपनी अनभिज्ञता के कारण गलत रूप में इस्तेमाल करते हैं, इसी कारण आदिकाल से आज पर्यन्त दोयम दर्जे का कलंक लिए कई स्त्रियाँ आज भी उपेक्षित और प्रताड़ित हो रही हैं. मैं त्रिया चरित्र का तात्पर्य अपने तरीके से समझाने की प्रयास करुँगी.

त्रिया चरित्र शब्द का इस्तेमाल सिर्फ महिलाओं के ही संबंध में किया जाता है. महिलाएँ इस कारण भी बहुत अधिक सम्माननीय एवं पूजनीय होती हैं कि प्रत्येक नारी अपने तीन चरित्रों के साथ इस सृष्टि में जन्म लेती हैं.

प्रथम -बेटी का रूप लेकर माता-पिता के कुल की रक्षा करती हैं, द्वितीय -किसी की पत्नी होकर जीवन पर्यन्त पतिव्रत धर्म का अनुसरण करती हैं और पति की सहगामिनी बनकर प्रत्येक दशा में गुरु की तरह सलाह देती हैं एवं आने वाली समस्या से सतर्क रखने हेतु सावधान कराती है.

तृतीय -नारी अपने बहू रूप में दो परिवारों को आजीवन गहरे एवं मधुरता के साथ सामंजस्य रखकर चलना सिखाती है. नारी का यह तृतीय रूप बड़ा ही दुष्कर और विकट होता है. यही वह

भूमिका होती है, जिसमें सुव्यवस्थित होकर चलने की बात होती है. यदि ससुराल पक्ष अच्छा हुआ तो सोने पर सुहागा हो जाता है और दुर्भाग्यवश यदि नारी का प्रारब्ध दुःखदायी हो तो बेचारी नारी पर तरह-तरह की यातनाएँ यहीं पर आरम्भ होती हैं. यह तीसरी भूमिका ही वास्तव में मुख्य भूमिका होती है. इसी रूप से नारी को अबला या सबला का चोगा पहना दिया जाता है.

दोस्तो, ध्यान रहे, त्रिया शब्द का अर्थ अच्छे-अच्छे ज्ञानी लोगों को भी नहीं पता होता है. वे स्त्री के बारे में बहुत ही ओछी सोच रखते हैं और अपनी कमजोरी को छुपाने में शिद्दत से लगे रहते हैं. कई पुरुष तो इतनी संकीर्ण विचारधारा वाले होते हैं कि उनकी दृष्टि में पत्नी केवल भोग की वस्तु है. ऐसा निकृष्ट नजरिया रखते हैं कई पुरुष इतने झूठे अहंकार में जीवन जीते हैं कि औरत को नरक का द्वार तक की संज्ञा दे डालते हैं. अपनी खोखली सोच को समाज में इस तरह से स्थापित कर देते हैं कि नारी- ही नारी की सबसे बड़ा शत्रु हो जाती है. एक नारी दूसरी नारी के गुणों को कुचलने की कोशिश में लगी होती है. उन्हें जरा भी दूसरों की खुशी की अनुभूति नहीं होती है.नारी को नारी का दुश्मन बनाने वाला कोई दूसरा नहीं वरन् पुरुष जाति ही सबसे बड़ा कर्ता-धर्ता एवं हर्ता है. निष्ठुर, निकम्मे होकर भी पुरुष परिवार का प्रधान अंग माने जाते हैं. पुरुष अपने इसी अहंकार के कारण दम्भी, व्यभिचारी एवं हवसी होते हैं और शक्तिस्वरूपा नारी के चरित्र को कलुषित करके समाज, परिवार एवं सम्पूर्ण सृष्टि में नारी को असहाय बनकर दर- दर की ठोकरें खाने को विवश कर देते हैं. बेचारी नारी इस परिस्थिति को स्वीकार करें या बर्दाश्त यह उनकी अंत:करण की पवित्रता एवं सहनशीलता पर निर्भर करता है. नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नहीं होती बल्कि गौर किया जाए तो वे पुरुषों से भी कई मायनों में श्रेष्ठ होती है. नारी में संतति को उत्पन्न करने का वरदान प्राप्त है. पुरुष वर्ग अपनी छाती से किसी नन्हें शिशु को 'दूध' नहीं पिला सकता है. कोई पुरुष किसान की तरह केवल संतति या सृष्टि की रचना हेतु बीज की बुवाई कर सकता है, उस बीज के अंकुरण होने से लेकर एक पौधा बनने तक की प्रक्रिया में जो त्याग और मेहनत लगती है उसे केवल और केवल नारी ही अपनी सहनशीलता एवं असीमित धैर्य से कर लेती है और परिस्थिति को काबू में करके सारी दुनिया में अपनी ममता की वर्षा से बाढ़ ला देती है. नारी ममता की वह मूर्ति होती है कि उसका दर्जा और माँ धरती का स्थान स्वर्ग से भी श्रेयस्कर एवं श्रेष्ठ होता है.

धरती पर नारी के औचित्य की जो महत्ता आख्यानों से मिलती है उससे यही स्पष्ट होता है कि नारी ही शक्ति है और अपनी अपार शक्ति से स्वयंभू ब्रह्म, विष्णु एवं महेश जो कि क्रमशः कर्ता -भर्ता -हर्ता हैं, उन्हें भी माँ शक्ति विशेष परिस्थिति में उनकी स्तुति, प्रार्थना एवं वंदना करने हेतु विवश कर देती हैं. अर्थात् ब्रह्म, विष्णु और शिवशम्भू का अस्तित्व तभी कायम रहेगा जब माँ भगवती, माँ भवानी एवं माँ आद्यशक्ति उनकी ओर कृपा दृष्टि रखती है, उनके बिना

सृष्टि में सुख, शान्ति नहीं मिल सकती है. पराशक्ति ही प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप में सृष्टि की वास्तविक रचयिता है. कलयुग के सारे नकारात्मक, दोयम दर्जे की सोच रखने वाले पुरुषों को अपने खोखले आडंबर, दिखावे और झूठी मर्दानगी का अर्थ समझ में आ गया होगा. इसीलिए समभाव की भावना और दृष्टिकोण अपनाने वाले बुद्धिमान पुरुष का घर-परिवार बहुत ही बहुत खुशहाल माना जाता है. चतुर पुरुष हमेशा अपनी पत्नी को परिवार की मुख्य धूरी समझकर उसकी भावना का सम्मान और प्रेम करते हैं. ऐसे पुरुष ही समाज के स्वस्थ और अभिन्न अंग माने जाते हैं.

परी हूँ मैं

रचनाकार- सरिता लहरे 'माही'

परी हूँ मैं पंखों वाली,
नील गगन में खेलने जाऊँगी.

चन्दा मामा से बातें करके,
तारों को दोस्त बनाऊँगी..
सारे खिलौने, गुड्डे - गुड़ियाँ
मैं संग अपने ले जाऊँगी.

चन्दा मामा संग खेलूँगी मै,
खीर पुरी खाऊँगी..
दोस्त मेरे चमकते तारे,
मैं भी संग मिल जाऊँगी.

परी हूँ मैं पंखो वाली,
नील गगन में खेलने जाऊँगी..
वहाँ कदम का पेड़ है जिसमें,
मैं झूला "झूल" के आऊँगी.

घूम कर मैं आसमान सारा,
चिड़ियों से मिलकर आऊँगी..
परी हूँ मै पंखों वाली,
नील गगन में खेलने जाऊँगी.

*****

बिलाड़ी

रचनाकार- श्रीमती वंदिता शर्मा

एक बिलाड़ी जाड़ी,
उसने पहनी साड़ी.

साड़ी पहनकर घुमने गई,
ताला में तुतरने गई.

बिल्ली का पल्ला फंसी गयो,
बागड़ बिल्ला खाई गयो.

*****

संघर्ष

रचनाकार- सीमा यादव

जीवन का प्रति क्षण संघर्षों से भरा है,
हर पल नयी-नयी चुनौतियों से घिरा है.

जीवन एक साधना है, एक तपस्या है,
जीतता वही है जिसने इनका सामना किया है.

हताश मन को जीतना ही संघर्ष है,
निराशा में आशा का भाव जगाना ही संघर्ष है.

कोई निर्बल मन से हार जाता है,
तो कोई अँधेरे में भी उजाले की आस रखता है.

जो धैर्य और हौसले से आगे बढ़ता है,
इतिहास में वही अपनी अमिट छाप छोड़ता है.

जीवन का कोई भी पल बेकार नहीं है,
प्रत्येक पल अनमोल, बेशकीमती है.

वो व्यक्ति जीवन से हार जाता है,
जो धैर्य और साहस नहीं रख पाता है.

हताश मन से इंसान पंगु हो जाता है,
उत्साही मन से भरा व्यक्ति विजेता बन जाता है.

*****

भोर

रचनाकार- श्रीमती सत्या कौशिक

सूरज निकला,
हुआ उजाला.
चहकी चिड़ियाँ,
दिन मतवाला.
खिल गए फूल,
चली पुरवाई.
काम पर अपने,
लग जाओ भाई.
शाम हुई सब,
मिलकर खेलो,
चंदा संग-संग,
तारों को छू लो.
अम्मा ने लोरी,
जो सुनाई,
प्यारी निंदिया,
रानी आई.

*****

पहेली (छाता)

रचनाकार- मिनेश कुमार साहू

सोलह, बारह, आठ कड़ी है.
लंबी डंडी एक छड़ी है..

तनी है चादर जिसके ऊपर.
पड़ने ना दे पानी हम पर..

धूप वर्षा में आता काम.
बतादो भइया इसका नाम..

दादा जी जब बाजार जाते.
कंधे पर अपने लटकाते..

रंग बिरंगा मन को भाता.
छा से जिसका नाम आता..

*****

पढ़ाई तुंहर द्वार

रचनाकार- श्रीमती लक्ष्मी तिवारी

हम नन्हे-मुन्ने बच्चें हैं,
प्यारे मन के सच्चे हैं.

पढ़ना हमको अच्छा लगता
कोरोना कहता घर पर रहो बच्चा.

करना हमको पढ़ाई है,
कोरोना से हमारी लड़ाई है.

कोरोना काल में भी होगी पढ़ाई,
शिक्षक ने मोहल्ला क्लास है लगाई.

मास्क लगाकर सुरक्षा नियम अपनाएंगे,
पढ़ने हम तो मोहल्ला क्लास जाएंगे.

ऑनलाइन, ऑफलाइन, बुलटू के बोल,
मिस्डकॉल गुरुजी और व्हाट्सएप कॉल.

शिक्षक से मिलता है बच्चों को ज्ञान,
प्रोजेक्ट आमाराईट अब हुआ आसान.

कमाल का है पढ़ाई तुंहर द्वार,
शिक्षा आ गई बच्चों के द्वार.

*****

तिरंगा प्यारा

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित"

नीलगगन पर आज, लहर लहराय तिरंगा.
तन-मन जीवन दान, त्याग सिखलाय तिरंगा.

अति अकूत अनमोल, अतुल अपनी आजादी.
अवनी से आकाश, अखिल अक्षय यह वादी.
गणनायक गणतंत्र, गर्व की गौरव गाथा.
भारत भरणी भूमि, धूल लग दमके माथा.
रक्षक सक्षम शैल, हिमालय कंचनजंगा.
नीलगगन पर आज, लहर लहराय तिरंगा.
तन-मन जीवन दान, त्याग बतलाय तिरंगा.

संविधान सहकार, सचेतक सबल सजीला.
कर्म और अधिकार, एक ही शब्द सलीला.
सारी दुनिया छोड़, राष्ट्र निज सहज सुहाता.
अपनापन अनुरोध, अनोखा अमित लुभाता.
न्यौछावर निज प्राण, सदा मैं बनूँ पतंगा.
नीलगगन पर आज, लहर लहराय तिरंगा.
तन-मन जीवन दान, त्याग बतलाय तिरंगा.

कीर्तिनीय कथनीय, क्रांति की कनक कहानी.
बाहुबली बेजोड़, राष्ट्रहित में बलिदानी.
भागीरथ भवभूष, कभी क्यों जीयें भुलकर.
आओ मिलकर साथ, कहें जय शहीद खुलकर.
स्वर्णिम है इतिहास, सामरिक साहस शिवगंगा
नीलगगन पर आज, लहर लहराय तिरंगा.
तन-मन जीवन दान, त्याग सिखलाय तिरंगा.

*****

दाखिला लें सरकारी

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित"

चलो चलें हम स्कूल, आज अब से सरकारी.
अपने घर के पास, करें शाला से यारी.
दौड़भाग क्यों दूर, पसीना व्यर्थ बहाना.
सबके रहो समीप, वहीं पर नाम लिखाना.

नया-नया परिवार, नई खुशियों का मेला.
हमजोली का साथ, लगे हैं रेलम-पेला.
कापी पेन किताब, पहाड़ा रख लो बस्ता.
भाँति-भाँति के लोग, लगे शाला गुलदस्ता.

टन-टन घंटी बोल, कान में मधुर सुनाती.
बजते दस जब नित्य, सभी को स्कूल बुलाती.
ईश विनय कर जोड़, प्रार्थना मन से गाते.
साफ़ सफाई योग, स्वच्छ तन स्वस्थ बनाते.

सरस्वती का धाम, बड़ा पावन विद्यालय.
पढ़ना लिखना पाठ, सीख का उत्तम आलय.
खेलकूद सब साथ, मेहनत तप अनुशासन.
नैतिक सद्व्यवहार, सभ्यता संग उपासन.

भ्रम झूठ से दूर, प्रमाणित होती शिक्षा.
साझा सेवाभाव, समर्पित होती कक्षा.
प्रीत भरे प्रतिपाल, दीप सम जलते शिक्षक.
शिक्षा सह संस्कार, सहज बनते संरक्षक.

विनय विमल व्यवहार, स्कूल सबका सरकारी.
भेदभाव का भाग, गुणा गुण शिष्टाचारी.
हृदय बालपन जोड़, कहाँ ऋण फिर गुणवत्ता.
देश राज्य समुदाय, सदा सहयोगी सत्ता.

हाथ धुलाई लाभ, रगड़ धोना सिखलाते.
मीनू के अनुसार, गर्म भोजन सब खातें.
दो जोड़ी गणवेश, किताबें मिलती पूरी.
सबको शिक्षादान, पढ़ाई जीवन धूरी.

छात्रवृत्ति प्रतिवर्ग, पढ़े होकर उत्साही.
मुफ्त सायकल प्राप्त, सुलभ सब आवा-जाही.
शिक्षक सभी सुयोग्य, बेहतर पाठ पढ़ाते.
उच्च प्रशिक्षण प्राप्त, देश का भाग्य बनाते.

शौचालय उपयोग, पृथक सब बाला बालक.
विविध कला पर जोर, देख खुश होते पालक.
भाँति भाँति के खेल, मान सबका सदा बढ़ाते.
नवाचार व्यवहार, यहाँ संगणक पढ़ाते.

फिर क्यों इतना सोच, दाखिला लें सरकारी.
नहीं यहाँ पर शुल्क, प्रथम यह जन हितकारी.
साधन सुविधा सर्व, सदागम सत समझातें.
नैतिकता भरपूर, शिष्य को योग्य बनातें.

छोड़ निजी का मोह, स्कूल सरकारी आओ.
निज भाषा में ज्ञान, सहज ही पढ़कर पाओ.
शिक्षक सक्षम सिद्ध, 'अमित' होते उपकारी.
शंशय सारे त्याग, दाखिला लें सरकारी.

<u>सफलता की कहानी</u>

रचनाकार- श्रीमती शालिनी दुबे

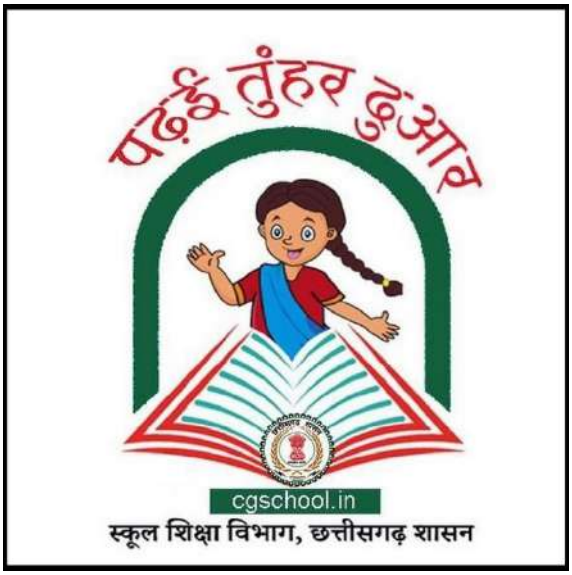

शोर मचाये सफलता,मेहनत इतनी ज्यादा हो. हो फख्र हर किसी को इकदिन, खुद से ऐसा वादा हो..

मुश्किलें इंसान को न जाने क्या-क्या हुनर सिखाती है. कोविड के इस समय में, मैंने स्वयं को विद्यार्थी की तरह पाया है और बहुत कुछ सीखा है. नई-नई तकनीकें सीखीं ताकि अपने विद्यार्थियों को बेहतर तरीके से पढ़ाऊँ कि वो आभासी कक्षा में भी उसी तरह लगन से पढ़ें जैसे वास्तविक कक्षा में. ऐसा मानना है बेमेतरा जिले की शिक्षिका श्रीमती शालिनी दुबे का. इनकी सफलता की कहानी बच्चों के प्रति निस्वार्थ प्रेम व तन्मयता से शिक्षण कार्य का ही परिणाम है, जिससे इस डिजीटल समय में इनका कार्य डिजिटल हुआ व जिले में इनका नाम उभरकर सामने आया.

पढ़ई तुँहर दुआर एक ऐसा पवित्र यज्ञ है जहाँ कोरोनाकाल में शिक्षा विभाग के शिक्षकों ने विद्यार्थियों को लाभान्वित करने का नवाचार किया व अपनी पूरी क्षमता लगा दी.

ऑनलाइन शिक्षा:- बच्चों का cgschool में पंजीयन कर ऑनलाइन क्लास, बहुत ही रोचक तरीके से पी.पी.टी. के द्वारा कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं. बच्चों को सरलतम तकनीक द्वारा व रोचक तरीके से शिक्षण कार्य के लिए विभिन्न तकनीकों को सीखकर शिक्षण के दौरान आकर्षक पीपीटी का इस्तेमाल किया गया. 249 कक्षाएँ अब तक ली गई. ऑफलाइन कक्षाएँ भी ली गईं.

ब्लॉग लेखन:- राज्यस्तरीय ब्लॉग लेखन के दायित्व का निर्वहन किया गया व cg वेबपोर्टल पर इनके द्वारा लिखे 17 ब्लॉग अपलोड हुए.

पॉडकास्ट टीम:- जनवरी माह चर्चा पत्र में एजेंडा -09,फरवरी माह-एजेंडा-05 व मार्च माह एजेंडा-03 को अपनी आवाज देने का अवसर मिला.

कार्टून वीडियो:-.इनके द्वारा कार्टून वीडियो बनाए गए हैं जो लर्निंग आउटकम पर आधारित होते हैं.

टॉय पेडागोजी:-टॉयज मेकिंग (खिलौने बनाना) नई शिक्षा नीति के तहत लर्निंग आउटकम पर आधारित बहुत सारे खिलौने इनके द्वारा बनाए गए हैं. बच्चो को मिट्टी की कलाकृति बनाना सिखाया गया साथ ही बच्चों को अपने मन से आकृतियाँ बनाने का अवसर दिया गया. बच्चों ने खूब सारे मिट्टी के खिलौने भी बनाए. शाला स्तर पर प्रदर्शनी भी आयोजित की गई व SCERT 2021 टॉय फेयर में इनके बनाए वायु दाब पर आधारित टॉयज का चयन भी हुआ.

टी.एल.एम. निर्माण कार्य :- विज्ञान के अलावा संस्कृत इंग्लिश, हिंदी गणित सामान्य ज्ञान पर भी टी.एल.एम. बनाए गये.

अँगना म शिक्षा कार्यक्रम का बेमेतरा जिले में पहला आयोजन इनके द्वारा किया गया.

ऑग्मेंटेड रियलिटी:-शिक्षण कार्य मे ऑग्मेंटेड रियलिटी का उपयोग किया गया, ताकि बच्चे शब्द प्रमाण तक सीमित न रहें, उनके सामने ही वो चीजें वास्तविक रूप में हों.

स्टोरी वीवर:- लेखन का शौक होने की वजह से कुछ कहानियाँ, बाल साहित्य लिखकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई. किलोल में भी बच्चों के लिए कविता, कहानी,लेख लिखे.

कबाड़ से जुगाड़:-क्ले और वातावरण में उपलब्ध अन्य सामग्री के द्वारा कबाड़ से जुगाड़ बनाया गया, ताकि बच्चों को भी सिखा सकें व उन्हें शिक्षण कार्य से जोड़ सकें.

विज्ञान की अनोखी दुनिया:- नवाचारी गतिविधि. इस कोविड महामारी के समय में भी विभिन्न तरीकों से बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया गया. 'विज्ञान की अनोखी दुनिया' के द्वारा शनिवार को बच्चों के बीच प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है. इस कार्यक्रम के माध्यम से कोरोना से बचाव के लिए जागरूक किया गया. प्रतिदिन ऑनलाइन कक्षा के साथ विज्ञान पर आधारित चित्रों की प्रतियोगिता आयोजित की गई.

बच्चों में रचनात्मक कौशल के विकास के लिए

1. आर्ट एंड क्राफ्ट की कक्षाएँ ली गईं.
2. खिलौने बनाना सिखाया गया.
3. कबाड़ से जुगाड़ के अंतर्गत शाला स्तर पर प्रदर्शनी लगाई गई. जिसमें लगभग 90% बच्चों ने भाग लिया.
4. खिलौना बनाना सिखाया गया जो लर्निंग आउटकम पर आधारित है. मेरे द्वारा भी लर्निंग आउटकम पर बहुत सारे खिलौने और शिक्षण सामग्री बनाई गई ताकि बच्चे शिक्षा से जुड़ सकें.
5. कोरोना के प्रति जागरूकता के लिए टीमवर्क का आयोजन किया गया और 'कोरोना को पत्र' लिखा गया. ऑरिगामी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन ऊर्जा संरक्षण पर चित्रकला व स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. ताकि बच्चों में कल्पना शक्ति का विकास हो.

विज्ञान के लिए रुचि जागृत करने के लिए बच्चों को विज्ञान से संबंधित मजेदार कार्य दिया जाता है जैसे अपने आसपास से विज्ञान के चमत्कार से संबंधित उदाहरण ढूँढ कर उनकी फोटो खींच कर या वीडियो बनाकर भेजें.

बच्चों में सामाजिक गुणों के विकास करने के लिए चर्चा का विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है 'राष्ट्रीय किसान दिवस पर चर्चा रखी गई "हमें भोजन कहाँ से मिलता है और हमारे अन्नदाता किसान व उनके कार्यों पर चर्चा करें!"

गूगल फॉर्म:-विज्ञान, संस्कृत, इंग्लिश टेस्ट गूगल फॉर्म के द्वारा लिया जाता है.

लर्न विद फन':- इस कार्यक्रम के तहत प्रयोगों पर आधारित शिक्षण कार्य करवाया जाता है. जिसमें विज्ञान से संबंधित प्रयोग करके बच्चों को उनके सिद्धांत बताए जाते हैं.

इंग्लिश रीडिंग आयोजन किया जाता है ताकि बच्चे अच्छे से इंग्लिश पढ़ना सीखें.

इनके यू ट्यूब चैनल विज्ञान की अनोखी दुनिया में टी.एल.एम. लर्निंग आउटकम पर आधारित टॉयज, पीपीटी आधारित पाठ्यक्रम व कार्टून वीडियो द्वारा शिक्षण सामग्री उपलब्ध है.

*****

चुनाव

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बोला बंदर सभी जानवरों से
जंगल में चुनाव है होने वाला.
मुख्य मंत्री शेर तो अपनी
कुर्सी है खोने वाला.

पांच साल तक जंगल वासियों ने
मंहगाई, बेरोजगारी, गुंडाराज देखा है.
इस सरकार से वनवासी
बहुत ही खफा हैं.

शेर की मनमानी से
दुखी हैं जंगल वासी.
गुंडा राज से देखो
सबके चेहरे पर हैं उदासी.

इस बार हमें मिल जुल कर
शेर को हटाना है.
भारी मतों से हमें
हाथी भैया को जिताना है.

शेर हार गया चुनाव
जुमले बाजी काम न आई.
गुंडा राज महंगाई से
सबने छुट्टी पाई.

*****

धरती हरा भरा बनाएं

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आओ हम सब मिल कर
धरती को हरा भरा बनाएं.
कम से कम एक पेड़
अपने हाथों से लगाएं.

गर्मी सूखा आक्सीजन से
हम सब छुटकारा पाएं.
बाग बगिचा जंगल
मिल जुल कर लगाएं.

विश्व पर्यावरण दिवस का
आओ हम मान बढ़ाएं.
अपने स्कूल कालेज में
एक एक पेड़ लगाएं.

सड़को के किनारे फिर से
हम नया पेड़ लगाएं.
हर मुसीबत से हम
मिल कर छुटकारा पाएं.

छांव और ठंडी हवा
खूब देते हमको पेड़.
हम सब की सारी मुसीबत
हर लेते हैं पेड़.

पांच जून को हर साल
विश्व पर्यावरण दिवस है आता.
पेड़ लगाने की घूम
हर जगह मच जाता.

*****

जैसे कोई अंगारा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

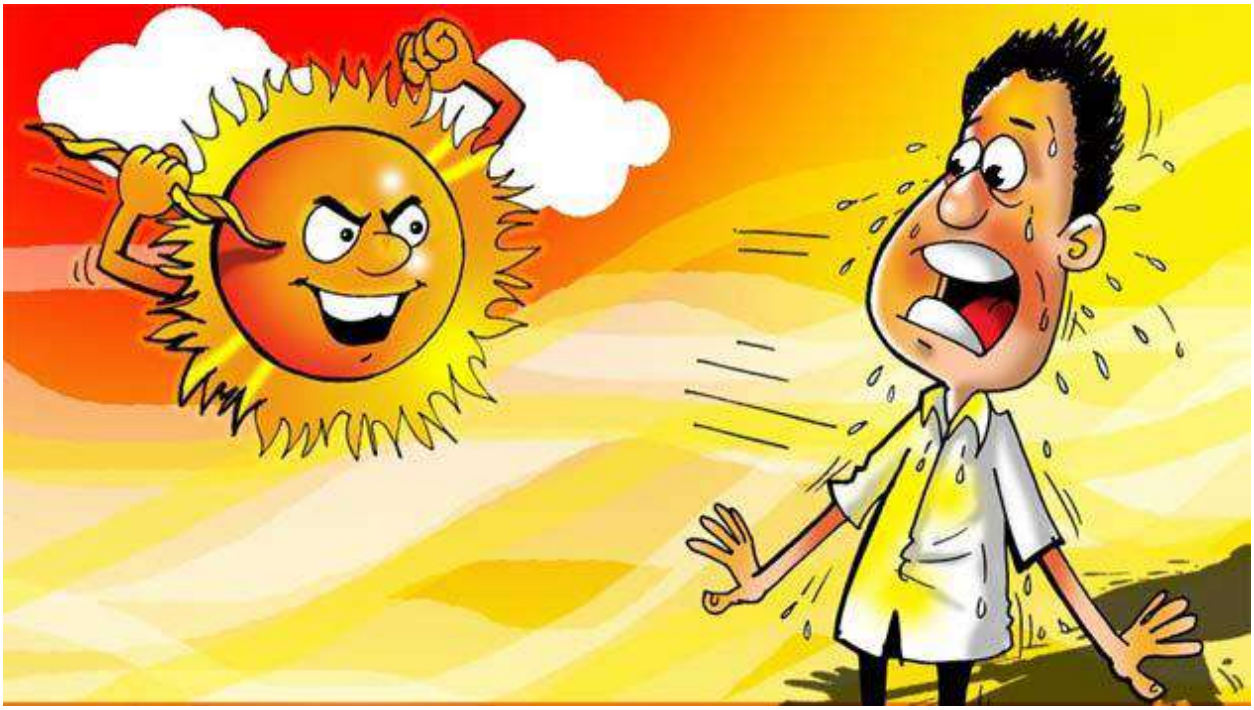

सड़क तप रही है ऐसे
जैसे कोई अंगारा.
धूप बरस रही है ऐसे
जैसे कोई फौब्बारा.

गर्मी आ कर सबको
सता रही हैं सबको.
पसीने से बार बार
नहला रही हैं सबको.

गर्म हवा और लू
मार रही है थप्पड़.
चल रही है गर्मी
देखो अकड़ अकड़.

छांव कहीं नजर नहीं आ रही
कंकरीट के जंगल में.
सारे परेशान हैं गर्मी से
बैठे हैं जो महलों में.

सर से ले कर पांव तक
हम गर्मी झेल रहे हैं.
बादल कब आएंगे
हम उनकी राह देख रहे हैं.

*****

करते हैं जो योग

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

रोज सुबह जो उठ कर
करते हैं जो योग.
जीवन में हमेशा
करते हैं सुख का भोग.

तरह तरह की बिमारियों से
हमें बचाता है योग.
नष्ट हो जाते सारे कष्ट
जो करते नियमित योग.

सदा जीवन में वह
तन्दुरुस्त रहते हैं.
जो योग को प्रति दिन
नियम से करते हैं

सौ रोगों की एक दवाई
देखो बस यह योग.
सारे रोग को दूर करता
देखो बस यह योग.

खुद को योग करो तुम
और दूसरे को भी सिखलाओ.
योग दिवस है आज
सब मिल कर इसे मनाओ.

कर के नियमित योग
निरोगी काया बनाओ.
योग से फायदे क्या क्या है
सब लोगों को समझाओ.

*****

चिता सुलगा

रचनाकार- सोमेश देवांगन

सुलगा के बीड़ी चोंगी म तय,
अपने चिता ला तय सुलगाबे.
भुकुर भुकुर तीरत हव कहिके,
अपने चिता ला हवा देखाबे..

खोरोर खोरोर खाँसबे तय हर,
रात ला जाग जाग के पहाबे.
तय तो मरबे तो मरबे रे मनखे,
संग मा परिवार ला भोगवाबे..

सउख शान के मारे नशा करे,
धन धरम संग जीव ला गवाबे.
घर दुवार संग सुवारी छूट जाही,
जियते जियत तय नरक देख के आबे..

*****

बादल

आओ बादल छाओ बादल.
अब तो सम्भल जाओ बादल.

प्यासी धरती तुम्हें पुकारे,
मन भर जल बरसाओ बादल.

हम नन्हे-मुन्नों के खातिर,
आज नहीं तो कल आओ बादल.

*****

मेंढक

ताल-तलैया भर आया.
टर्र.. टर्र.. मेंढक टर्राया.

नदी नाले और पोखर,
मेंढक का मन हर्षाया.

मछली कच्छप केकड़े को,
मेंढक ने एक गीत सुनाया.

*****

आम

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

गर्मी आई, गर्मी आई,
पकने लगे आम भाई.
हवा चली भई, हवा चली,
लगे गिरने सारे आम.
मुनिया का जी ललचाया,
देख पीले-पीले आम.
एक बड़ी सी टोकरी में,
मुनिया भरकर लाई आम.
खाई और खिलाई सबको,
खट्टे मीठे रसीले आम.
आम फलों का राजा है,
सबके मन को भाये आम.

चेहरा सबका ख़िल गया,
खाकर मीठे ताजे.
मुनिया रानी बड़ी सयानी,
नहीं तोड़ती कच्चे आम.
करती दिनभर रखवाली,
मिला तभी तो पके आम.

*****

पकड़ में आया चूहा

रचनाकार- मो. ज़मील

पकड़ में आया,
पकड़ में आया, देखो आज
मोटा ताजा चूहा
बिल्ला ने खाकर बोला
बहुत मजा,बहुत आया

कई दिनों से नहीं मिला था
खाने को खोटा चूहा
आज मेरी खुशक़िस्मती थी
मिल गया मोटा चूहा
दुध मलाई खा खाकर मन
मेरा भर गया था बुआ.

पकड़ में आया,
पकड़ में आया, देखो आज
मोटा ताजा चूहा.

दुबला पतला हो गया था
देखके हँस रही थी बिल्ली
अपनी सहेली को कहकर
उड़ा रही थी मेरी खिल्ली
अब मेरी बॉडी को देखकर
बिल्ली हुई बेहाल.

पकड़ में आया, आज देखो
मोटा ताजा चूहा.

*****

स्वतंत्रता दिवस

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

स्वतंत्रता दिवस आया,
खुशियाँ अपने साथ लाया.
तिरंगा झंडा लहराया,
स्वतंत्रता दिवस आया.
यादें अपने साथ लाया,
स्वतंत्रता को अपनाया.
देश को महान बनाया,
स्वतंत्रता दिवस आया.
वीर शहीदों ने प्राण गवायां,
तब स्वतंत्रता दिवस आया.

*****

चलो चले चलो चले, स्कूल चले

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

शिक्षा का अलख जगाना है,
मिलकर दीप जलाना है.
चलो चले.....

सबको शिक्षा मिले सुलभ,
अपना हो बस यही कर्तव्य.
चलो चले....

लड़का लड़की में भेद न हो,
जाति धर्म का भेद न हो.
चलो चले....

सब पढ़ लिख बने सुजान,
तब अपना देश बने महान..

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

सुधारानी शर्मा द्वारा भेजी गई कहानी

एक ही तरह का जीवन जीते जीते हम बड़बडभी ऊब जाते हैं, फिर बबलू तो बच्चा ही था. मम्मी पापा ने ध्यान दिया कि बबलू बहुत सारा समय अपने मोबाइल गेम, टेलीविजन,गूगल, यूट्यूब में कार्टून देखना, आदि पर लगाता है. अपनी टेबल पर बैठे-बैठे ही सारा समय बिताना, शारीरिक कार्य का बिल्कुल अभाव यही बबलू की दिनचर्या हो गई थी. उसके स्वभाव में परिवर्तन आ रहा था. मम्मी पापा ने बबलू को इस स्थिति से बाहर निकालने के लिए, अच्छी संदेशपरक ज्ञानवर्धक किताबों का सहारा लिया.

उनके पड़ोस में रहने वाले शर्मा दंपति ने अपने घर के ऊपरी तल पर पुस्तकालय खोला था, जिसमें निःशुल्क किताबों की सुविधा थी. मम्मी पापा बबलू को, शर्मा जी के पुस्तकालय में ले गए. वहाँ पर बबलू ने देखा कि किताबों की दुनिया कितनी रोचक थी. रंग बिरंगी चित्रोंवाली, ज्ञान देने वाली, धार्मिक, सामाजिक, योग की किताबें, अमर चित्र कथा, चंपक, चंदामामा, पराग, टेल मी व्हाई, महापुरुषों की रोचक जीवनियाँ, पिंकी के कार्टून, लोक कथाएँ पञ्चतंत्र,हितोपदेश की कहानियाँ, राजा रानी की कहानियाँ, विक्रम बेताल की कहानियाँ, विज्ञान के आविष्कारों की कहानियाँ. इतनी अच्छी-अच्छी किताबें, बबलू के मन में इतनी उत्सुकता भर गई कि वह हर किताब को जल्दी से जल्दी देखना चाह रहा था. मम्मी पापा से कह रहा था, मम्मी मै इसे भी पढ़ लूँगा.

मम्मी ने कहा, बेटा तुम्हें किताबों से अनमोल खजाना मिल जाएगा, पर पहले तुम्हें अपनी दिनचर्या सुधारनी होगी, अभी तुम योग और कहानियों की किताबें ले जाओ.

सुबह जल्दी उठकर योगाभ्यास करो, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है और प्रफुल्लित मन से किताबें पढ़ो. तुम्हें अच्छा लगेगा,मन सक्रिय होगा, शरीर में स्फूर्ति आएगी.

इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग ठीक है, पर हमेशा उन पर निर्भर रहना ठीक नहीं है. अपने मस्तिष्क का सही उपयोग करो. बबलू के चेहरे पर मुस्कान आ गई उसने कहा मैं किताबों को जरूर पढ़ूँगा,मैं इन्हें अपने साथ लेकर जा रहा हूँ.

मम्मी पापा के साथ ही, शर्मा आंटी के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई थी.

अनन्या तंबोली द्वारा भेजी गई कहानी

चूहा और कबूतर

एक दिन एक शिकारी ने कबूतर पकड़ने के लिए जाल बिछाया था. और उसमें चारा डाला था. कबूतर बिखरे हुए दाने देखकर खाने के लिए उतर गए. वे दाना खा ही रहे थे कि शिकारी के जाल में सब फँस गए. उन्होंने उड़ने की बहुत कोशिश की लेकिन उड़ नहीं पाए और गुटर गूँ गुटर गूँ की आवाज करने लगे. उनकी आवाज सुनकर आसपास से चूहे उनकी मदद के लिए आ गए. चूहों ने जाल काटना शुरू कर दिया. जाल बहुत बड़ा और मजबूत था लेकिन चूहों ने अपना काम जारी रखा और धीरे-धीरे करके सारा जाल कुतर डाला. सारे कबूतर आजाद हो गए और उन्होंने चूहों को बहुत धन्यवाद दिया.

शिकारी के फैलाए दानों को चूहों ने खा लिया. कबूतर उड़ गए और चूहों का पेट भर गया. इस प्रकार दोनों का लाभ हुआ. और शिकारी देखते ही रह गए.

दूसरों की मदद करने से स्वयं को भी लाभ होता है.

लक्ष्मी तिवारी द्वारा भेजी गई कहानी

कबूतर और चूहा

एक जंगल में एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़ था जिस पर बहुत सारे कबूतर रहा करते थे. एक दिन जंगल में एक शिकारी आया उसने देखा कि इस पेड़ पर बहुत सारे कबूतर रहते हैं, चलो इस पेड़ के नीचे जाल लगाकर सबको फँसा लिया जाए. शिकारी ने जाल लगाया और अनाज के दाने बिखेर दिए ताकि जब कबूतर आएँ तो जाल में फँस जाएँ. पेड़ पर बैठे कबूतरों में से एक कबूतर ने देखा कि नीचे अनाज के दाने बिखरे हुए हैं और वह खाने चला गया, उसने अपने दोस्तों से भी कहा देखो नीचे अनाज के दाने पड़े हैं आओ मिलकर खाएँगे. उस कबूतर की बात सुनकर सभी कबूतर अनाज को खाने के लिए नीचे आ गए,और जब सब कबूतरों ने अनाज का दाना खाना शुरू किया तो उनके ऊपर शिकारी का बिछाया जाल गिर गया. सारे कबूतर फँस गए. सारे कबूतर डर गए कि अब तो हम सब मारे जाएँगे थोड़ी देर में शिकारी आएगा और हम सब को पकड़ लेगा. उनमें से एक कबूतर बहुत समझदार था| उसने कहा डरो मत, हमें कुछ नहीं होगा हम अब तक अलग-अलग प्रयास कर रहे थे लेकिन हमें कोई परिणाम नहीं मिला. अब हमें एक साथ मिलकर प्रयास करना है और इस जाल को साथ लेकर उड़ना है, अगर हम अलग-अलग प्रयास करते रहेंगे तो कभी जाल से नहीं निकल पाएँगे. चलो हम सब मिलकर उड़ने की कोशिश करते हैं और सभी कबूतरों ने एक साथ उड़ने की कोशिश की. उनकी यह कोशिश रंग लाई और सभी कबूतर जाल लेकर उड़ गए. वह शिकारी रास्ते में ही था, उसने देखा कि सारे कबूतर जाल लेकर उड़ गए. वह सोचने लगा, यह कैसे हो सकता है? जाल तो मैंने बहुत ही अच्छे से लगाया था. सब कबूतर उड़ते उड़ते एक दूसरे से कह रहे थे अब हम इस जाल से बाहर कैसे निकलेंगे? हम उस शिकारी से तो बच गए लेकिन इस जाल से कैसे बचेंगे? समझदार कबूतर ने कहा,चिंता मत करो थोड़ी दूर पर मेरा दोस्त चूहा रहता है हम वहाँ चलते हैं. वह यह जाल जरुर काट देगा और हम आजाद हो जाएँगे. सभी कबूतर वहाँ पर पहुँच गए. चूहे ने जाल काट दिया और सारे कबूतर बहुत खुश हुए. सारे कबूतरों ने उस चूहे का धन्यवाद किया.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

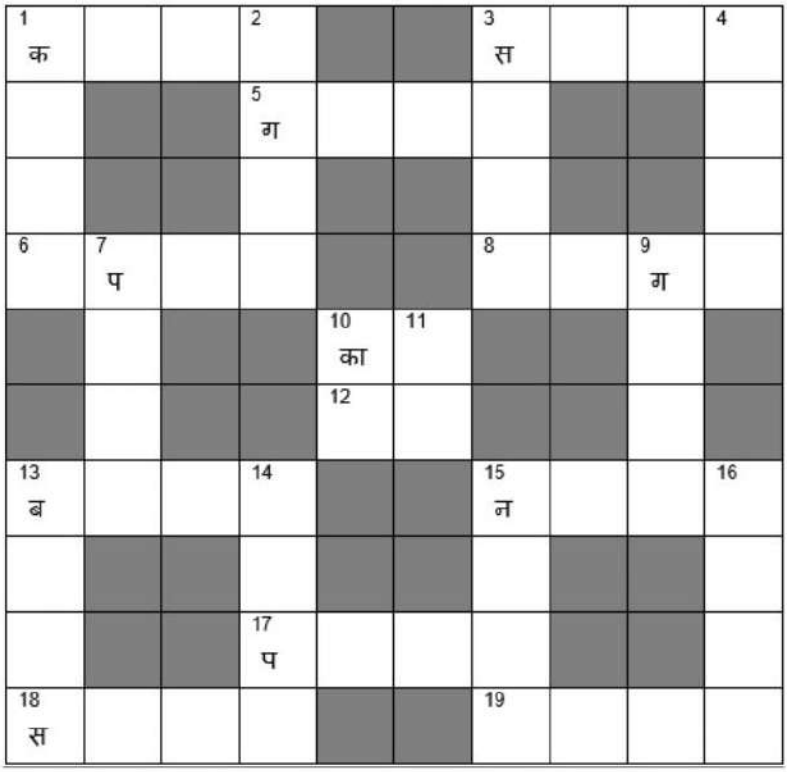

बाएँ से दाएँ

1. कमरबंध 3. सीधा लंबा 5. एक साँप का नाम 6. बातुनी 8. कसमसाहट 10. किसको 12. साधू, बैरागी 13. मजदूर 15. माँ का मायके 17. दुल्हन लाने का रश्म 18. तेज दौड़ 19. दसगात्र।

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

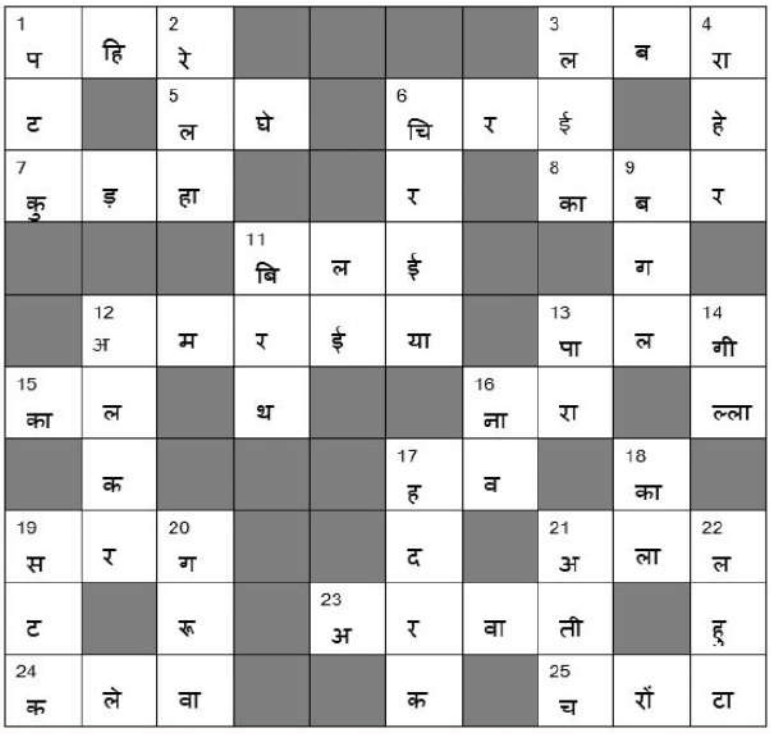

ऊपर से नीचे

1. बड़ा चम्मच 2. हल चलाने वाला 3. लगातार 4. अधिक वस्तु या लोगों का सटा होना 7. बारात स्वागत कार्यक्रम 9. ग्रामीण 10. किसलिए 11. लाइए, लाओ 13. बन गया 14. थप्पड़ 15. नातिन 16. बाली, झुमका ।

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की सदस्यता जारी रखने हेतु सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)

आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।